व्याकरण तरु

हिंदी व्याकरण

10 कोर्स 'B'

उत्तरमाला

डॉ॰ प्रीति 'सागर'
एम॰ए॰, पीएच॰डी॰

Harbour Press®
INTERNATIONAL

अपठित गद्यांश

15. (क) iv	(ख) i	(ग) i	(घ) iv	(ङ) iii
16. (क) ii	(ख) iv	(ग) iv	(घ) i	(ङ) ii
17. (क) iv	(ख) iii	(ग) i	(घ) ii	(ङ) iii
18. (क) i	(ख) iv	(ग) iv	(घ) ii	(ङ) ii
19. (क) iii	(ख) ii	(ग) i	(घ) iii	(ङ) iv
20. (क) i	(ख) ii	(ग) iii	(घ) i	(ङ) iv
21. (क) ii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iii
22. (क) i	(ख) iv	(ग) i	(घ) iv	(ङ) iii
23. (क) iv	(ख) ii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) i
24. (क) iv	(ख) iii	(ग) i	(घ) i	(ङ) i
25. (क) ii	(ख) i	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iii
26. (क) iii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iii
27. (क) i	(ख) iii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) iii
28. (क) ii	(ख) iii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) ii
29. (क) iii	(ख) ii	(ग) ii	(घ) iv	(ङ) i
30. (क) ii	(ख) iii	(ग) ii	(घ) i	(ङ) ii
31. (क) ii	(ख) ii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) i
32. (क) iv	(ख) ii	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iv
33. (क) iii	(ख) i	(ग) iii	(घ) i	(ङ) ii
34. (क) iii	(ख) i	(ग) ii	(घ) i	(ङ) i

खंड-ख : व्यावहारिक व्याकरण

1. पदबंध

1. (क) 'शब्द' भाषा की स्वतंत्र एवं अर्थवान इकाई है। जब शब्द स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है और वाक्य के बाहर रहता है तब वह शब्द होता है, किंतु जब शब्द वाक्य के अंग के रूप में प्रयुक्त होता है, तब वह 'पद' बन जाता है। जब एक से अधिक पद मिलकर एक ही व्याकरणिक इकाई का काम करते हैं तब उसी बँधी इकाई को 'पदबंध' कहते हैं।

(ख) जब एक से अधिक क्रिया-पद मिलकर क्रिया का काम करने वाली इकाई का निर्माण करते हैं, तब उसे 'क्रिया पदबंध' कहा जाता है। क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया पहले आती है। उसके बाद अन्य क्रियाएँ मिलकर एक समग्र इकाई बनाती है, परंतु क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं। क्रियाविशेषण की जगह प्रयुक्त होने वाले एकाधिक पदों का समूह क्रियाविशेषण पदबंध कहलाता है। यह पदबंध प्रायः क्रिया से पहले आता है। इसमें क्रियाविशेषण प्रायः शीर्ष स्थान पर होता है। अन्य पद उस पर आश्रित होते हैं।

(ग) 1. दिल्ली से आने वाले डॉक्टर को होटल में टहराया गया।

2. परिश्रम करने वाले छात्र अवश्य उत्तीर्ण होंगे।

उपर्युक्त उदाहरण में रेखांकित अंश संज्ञा पदबंध हैं।

(घ) पदबंध निम्नलिखित पाँच प्रकार के होते हैं-

1. संज्ञा पदबंध 2. सर्वनाम पदबंध 3. विशेषण पदबंध 4. क्रिया पदबंध

5. क्रियाविशेषण पदबंध

2. (क) क्रिया पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) क्रिया पदबंध (ङ) विशेषण पदबंध

(च) सर्वनाम पदबंध (छ) संज्ञा पदबंध (ज) क्रिया पदबंध (झ) संज्ञा पदबंध (ञ) क्रिया पदबंध

(ट) क्रिया पदबंध (ठ) संज्ञा पदबंध (ड) संज्ञा पदबंध (ढ) सर्वनाम पदबंध (ण) विशेषण पदबंध

3. (क) संज्ञा पदबंध (ख) क्रियाविशेषण पदबंध (ग) सर्वनाम पदबंध (घ) संज्ञा पदबंध

(ङ) क्रिया पदबंध (च) विशेषण पदबंध (छ) संज्ञा पदबंध (ज) सर्वनाम पदबंध

(झ) सर्वनाम पदबंध (ञ) संज्ञा पदबंध (ट) विशेषण पदबंध (ठ) क्रिया पदबंध

(ड) क्रियाविशेषण पदबंध (ढ) सर्वनाम पदबंध (ण) क्रिया पदबंध (त) विशेषण पदबंध

(थ) क्रियाविशेषण पदबंध (द) क्रिया पदबंध (ध) सर्वनाम पदबंध (न) क्रियाविशेषण पदबंध

(प) संज्ञा पदबंध (फ) संज्ञा पदबंध (ब) विशेषण पदबंध (भ) क्रियाविशेषण पदबंध

(म) सर्वनाम पदबंध

4. (क) सर्वनाम पदबंध – 1. चोट खाए हुए तुम भला क्या खेलोगे?

2. मौत से जूझने वाला मैं मर नहीं सकता।

(ख) क्रिया पदबंध – 1. हम पढ़कर सो जाया करते हैं।

2. नाव पानी में डूबती चली गई।

(ग) विशेषण पदबंध – 1. लोहे की मज़बूत बड़ी अलमारी खोलो।

2. घर से भागा हुआ लड़का मिल गया।

(घ) संज्ञा पदबंध – 1. अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।

2. राम ने लंका के राजा रावण को मार गिराया।

(ङ) क्रियाविशेषण पदबंध – 1. वह बहुत धीरे-धीरे उठा।

2. उसने साँप को पीट-पीटकर मारा।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1.	(क) ii	(ख) iv	(ग) i	(घ) iii	(ङ) iii
	(च) i	(छ) iii	(ज) i	(झ) i	(ञ) iv
	(ट) iii	(ठ) i	(ड) iii	(ढ) iv	(ण) ii

2. रचना के आधार पर वाक्य रूपांतर

1. (क) मैंने ऐसे बच्चे को देखा जो स्कूटर चला रहा था।
   (ख) जो दिन-रात परिश्रम करते हैं, उन्हें सोच-समझकर खर्च करना चाहिए।
   (ग) समय पर काम करने वालों को पछताना नहीं पड़ता।
   (घ) लता की बहन आशा ने समारोह में गीत गाया और सभी को मुग्ध कर दिया।
   (ङ) मैंने एक दुबला-पतला व्यक्ति देखा जो भीख माँग रहा था।
   (च) उस छात्र ने पढ़ाई की और स्कूल से चला गया।
   (छ) जब उसने खेल-कूद लिया तब पढ़ने लगा।
   (ज) मैं स्टेशन पर पहुँचा और गाड़ी चलने लगी।
   (झ) बिल्ली झाड़ियों के पास बैठी और कुत्ते के जाने की प्रतीक्षा करने लगी।
   (ञ) गरीब मेहनत करते हैं, परंतु उन्हें भरपेट रोटी नहीं मिलती।
   (ट) मैंने उसे पढ़ाकर अमेरिका भेजा।
   (ठ) आप अंदर बैठें और देर तक बातें करें।
   (ड) मैंने पीड़ा से कराहते व्यक्ति को देखा।
   (ढ) सुबह की पहली बस पकड़कर शाम तक वापस आ जाओ।
   (ण) उसने आवेदन-पत्र लिखा जो नौकरी के लिए था।
   (त) उसके पहुँचते ही वर्षा होने लगी।
   (थ) उसने भाषण शुरू किया और तालियों की गड़गड़ाहट से उसका स्वागत हुआ।
   (द) मैंने वहाँ एक व्यक्ति देखा जो हृष्ट-पुष्ट था।
   (ध) बादल गरज रहे हैं और उनमें बिजली कौंध रही है।
   (न) उसकी पराजय नहीं होती क्योंकि वह परिश्रम करता है।
2. (क) वह लोकप्रिय था इसलिए उसका ज़ोरदार स्वागत हुआ।
   (ख) वे बाज़ार जाकर सब्ज़ियाँ लाए।
   (ग) उसने इस मुद्रा में अपने हाथ ऊपर उठाए थे जैसे उसे ईश्वर से कुछ माँगना हो।
   (घ) गायें घास खा रही हैं और बकरियाँ भी घास खा रही हैं।
   (ङ) कल मैंने बहुत स्वस्थ बच्चा देखा।
   (च) किसान के बैल खूँटे से खुलकर खेत में चरने लगे।
   (छ) चोर ने दुकान का ताला तोड़ा और भाग गया।
   (ज) मैंने एक कमज़ोर लड़की को देखा जो बहुत-से कपड़े धो रही थी।
   (झ) गुरु जी ने बताया कि कल छुट्टी है।

(ञ) डॉक्टर ने दवा दी और मरीज़ ठीक हो गया।

(ट) मैंने एक अंधा भिखारी देखा।

(ठ) उसने तताँरा को देखा और फूट-फूटकर रोने लगी।

(ड) जिस बालक ने गिलास तोड़ा है, वह खड़ा हो जाए।

(ढ) वर्षा रुकते ही वह आ गया।

(ण) कृपया सभी यहाँ आएँ और सुनें।

(त) आगे बढ़िए और पुरस्कार प्राप्त कीजिए।

(थ) घर जाओ और अपना गृहकार्य पूरा करो।

(द) वह अपराधी था, इसलिए उसे सज़ा मिली।

(ध) जैसे ही बादल घिरे वैसे ही वर्षा होने लगी।

(न) चूँकि वह परिश्रमी था, इसलिए सफल हुआ।

3. (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) संयुक्त वाक्य (घ) सरल वाक्य
(ङ) संयुक्त वाक्य (च) मिश्र वाक्य (छ) मिश्र वाक्य (ज) मिश्र वाक्य
(झ) मिश्र वाक्य (ञ) मिश्र वाक्य (ट) संयुक्त वाक्य (ठ) मिश्र वाक्य
(ड) सरल वाक्य (ढ) मिश्र वाक्य (ण) संयुक्त वाक्य (त) सरल वाक्य
(थ) सरल वाक्य (द) संयुक्त वाक्य (ध) संयुक्त वाक्य (न) सरल वाक्य

4. (क) वह सुबह उठते ही चाय पीकर टहलने चला गया।

(ख) कलाकार द्वारा मंच पर प्रस्तुति देते ही सभी दर्शक खुश हो गए।

(ग) घंटी बजने पर विद्यालय की छुट्टी होते ही सब बच्चे घर चले गए।

(घ) शिक्षिका ने कक्षा में आकर पढ़ाना शुरू कर दिया।

(ङ) अपने पास आए धोनी से बातचीत करके कोहली ने बॉलिंग में परिवर्तन किया।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नोत्तर

1. (क) इस बच्चा को ही बैल ने मारा था।

(ख) उसका बेटा सबसे समझदार है।

(ग) उसके स्टेशन पहुँचते ही गाड़ी चल दी।

(घ) गौरव ने अक्षय को तैयार रहने के लिए कहा।

(ङ) में कहानी सुनने से पहले सो गया।

(च) मैंने एक बहुत बीमार आदमी को देखा।

(छ) मैंने कल एक स्वस्थ बच्चा को देखा।

(ज) तुमने अच्छी घड़ी खरीदी।

(झ) मैंने आज एक बहुत बीमार व्यक्ति को देखा।

(ञ) अंगीठी सुलगाकर उस पर चायदानी रखी।

2. (क) सरला खूब पढ़ती है ताकि उसे अच्छी नौकरी मिल जाए।

(ख) वह फल खरीदने बाज़ार गया और फल लेकर आ गया।

(ग) पिता जी की इच्छा थी इसलिए मुझे छात्रावास में जाना पड़ा।

(घ) घायल सैनिक ने शस्त्र उठाया और शत्रुओं से लड़ने लगा।

(ङ) अध्यापिका ने समझाया अत: सब बच्चे तैयार हो गए।

(च) शहर में लगातार वर्षा हुई और लोग परेशान हो गए।

(छ) उसे पीड़ा है इसलिए वह कराहता है।

(ज) गायें घास खा रही है तथा बकरियाँ भी घास खा रही हैं।

(झ) वह वाचनालय गया और समाचार-पत्र पढ़ने लगा।

(ञ) मैंने एक व्यक्ति को देखा जो बहुत बीमार था।

(ट) वह प्रात:काल टहलता है अत: स्वस्थ है।

(ठ) राम कक्षा में प्रथम आता है क्योंकि वह परिश्रमी है।

(ड) राम ने शेर को देखा और डर गया।

(ढ) बालक खूब रोया फिर चुप हो गया।

(ण) दरवाजा खुला और वह अंदर आ गया।

(त) चाय तैयार हुई और उसने उसे प्यालों में भरी।

3. (क) आकाश में बाज ने उड़ते-उड़ते चिड़िया पकड़ी।

(ख) जो परिश्रमी हैं, वे भूखे नहीं मरते।

(ग) जैसे ही वह लड़का गाँव गया वैसे ही बीमार हो गया।

(घ) जैसे ही सभा समाप्त हुई वैसे ही सब लोग घर चले गए।

(ङ) जैसे ही तुम बाहर गए वैसे ही वह सो गया।

(च) जैसे ही पाँच बजते हैं मज़दूर अपने घर को लौट जाते हैं।

(छ) जो लोग पंक्ति में पीछे खड़े हैं वह टिकट नहीं खरीद सके।

(ज) स्कूल से घर आते ही छात्र खेलने चला गया।

(झ) उसने अपने हाथ माँगने की मुद्रा में इसलिए उठाए क्योंकि उसे ईश्वर से कुछ माँगना था।

(ञ) वह बाज़ार गया क्योंकि उसे पुस्तक लेनी थी।

(ट) जो शरीर से कमजोर व्यक्ति है, उसके लिए यह प्रतियोगिता नहीं है।

(ठ) जो माता-पिता की सेवा करता है, वह किसी और की सेवा-सहायता नहीं चाहता।

(ड) मैंने एक दुबले-पतले व्यक्ति को देखा, जो भीख माँग रहा था।

(ढ) जैसे ही मैं स्टेशन पर पहुँचा वैसे ही गाड़ी आ गई।

(ण) वह बाज़ार गया है क्योंकि उसे सब्ज़ी लेनी है।

(त) जब चाय तैयार हुई तो उसने प्यालों में भरकर हमारे सामने रख दिए।

(थ) बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था जिसमें पानी भरा हुआ था।

4. (क) मिश्र वाक्य (ख) सरल वाक्य (ग) मिश्र वाक्य (घ) मिश्र वाक्य (ङ) संयुक्त वाक्य

5. (क) जापान में चाय पीने की एक विधि को 'चा-नो-यू' कहते हैं।
   (ख) वामीरो ने जैसे ही तताँरा को देखा वह फूट-फूटकर रोने लगी।
   (ग) तताँरा की आँखें व्याकुल थीं और वे वामीरो को ढूँढ़ने में व्यस्त थीं।

6. (क) ग्वालियर में हमारा जो मकान था उसके दालान में दो रोशनदान थे।
   (ख) तताराँ विवश हुआ और उसने आग्रह किया।
   (ग) आप बिलकुल सच कह रहे हैं।
   (घ) जो लोग प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट होते हैं उनके जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं।

7. (क) वामीरो सचेत होकर घर की तरफ दौड़ी।
   (ख) सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और लाल बाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया।
   (ग) जब भाईसाहेब ने उछलकर पतंग की डोर पकड़ ली तब छात्रावास की ओर दौड़ पड़े।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1. (क) i (ख) ii (ग) i (घ) ii (ङ) iii
   (च) iii (छ) iv (ज) i
2. (क) ii (ख) i (ग) i (घ) ii (ङ) i
3. (क) ii (ख) i (ग) ii (घ) i (ङ) ii

3. समास

1. | | समस्त पद | विग्रह | समास का नाम |
|---|---|---|---|
| (क) | सज्जन | सद् (अच्छा) है जो जन (व्यक्ति) | कर्मधारय समास |
| (ख) | दया-प्रवाह | दया का प्रवाह | संबंध तत्पुरुष समास |
| (ग) | अन्न-जल | अन्न और जल | द्वंद्व समास |
| (घ) | भाग्यहीन | भाग्य से हीन | अपादान तत्पुरुष समास |
| (ङ) | लंबोदर | लंबा है जो उदर *अथवा* लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश | कर्मधारय/बहुव्रीहि समास |
| (च) | दृग-सुमन | दृगरूपी सुमन | कर्मधारय समास |
| (छ) | उच्चाकांक्षाएँ | ऊँची हैं जो आकांक्षाएँ | कर्मधारय समास |
| (ज) | ज्वालाकण | ज्वाला के कण | संबंध तत्पुरुष समास |
| (झ) | त्रिलोक | तीन लोक का समूह | द्विगु समास |
| (ञ) | मृगलोचन | मृग के समान लोचन | कर्मधारय समास |
| (ट) | निडर | डर से रहित | अव्ययीभाव समास |
| (ठ) | अनजान | न-पहचान | अव्ययीभाव समास |
| (ड) | श्वेतांबर | श्वेत है जो अंबर (वस्त्र) | नञ् तत्पुरुष समास |
| (ढ) | हिमालय | हिम का है जो आलय अर्थात पर्वत विशेष | बहुव्रीहि समास |
| (ण) | नवग्रह | नौ ग्रहों का समाहार | द्विगु समास |
| (त) | अनंत | न अंत | नञ् तत्पुरुष समास |
| (थ) | पाप-पुण्य | पाप और पुण्य | द्वंद्व समास |
| (द) | असभ्य | जो सभ्य नहीं है | नञ् तत्पुरुष समास |
| (ध) | यथाक्रम | क्रम के अनुसार | अव्ययीभाव समास |
| (न) | रातोंरात | रात ही रात में | अव्ययीभाव समास |

2. | | समस्त पद | विग्रह | समास का नाम |
|---|---|---|---|
| (क) | तुलसीदासकृत | तुलसीदास के द्वारा कृत | संप्रदान तत्पुरुष समास |
| (ख) | माँ-बाप | माँ और बाप | द्वंद्व समास |
| (ग) | देहलता | देह रूपी लता | कर्मधारय समास |
| (घ) | मदांध | मद से अंधा | करण तत्पुरुष समास |
| (ङ) | जीवन-मरण | जीवन और मरण | द्वंद्व समास |
| (च) | आजीवन | जीवन भर | अव्ययीभाव समास |

(छ) अठन्नी	आठ आनों का समूह	द्विगु समास
(ज) अनादि	न आदि	नञ् तत्पुरुष समास
(झ) नरसिंह	सिंह रूपी नर	कर्मधारय समास
(ञ) पंचानन	पाँच आनन (मुख) का समाहार	द्विगु समास
(ट) चंद्रमुख	चंद्र के समान मुख	कर्मधारय समास
(ठ) नर-नारी	नर और नारी	द्वंद्व समास
(ड) मृगनयनी	मृग जैसे नयनों वाली है जो अर्थात सीता जी	बहुव्रीहि समास
(ढ) आजीवन	जीवन भर	अव्ययीभाव समास
(ण) त्रिनेत्र	तीन नेत्रों का समाहार	द्विगु समास
(त) दीर्घजीवी	दीर्घ काल तक जीवित रहने वाला	कर्मधारय समास
(थ) पंसारी	किराने की दुकान चलाने वाला व्यक्ति विशेष अर्थात बनिया	बहुव्रीहि समास
(द) नाना-नानी	नाना और नानी	द्वंद्व समास
(ध) चौराहा	चार राहों का समाहार	द्विगु समास

3.

समास-विग्रह	समस्तपद	समास का नाम
(क) चिंता में मग्न	चिंतामग्न	अधिकरण तत्पुरुष समास
(ख) माया और मोह	माया-मोह	द्वंद्व समास
(ग) बिना सहारे	बेसहारा	अव्ययीभाव समास
(घ) क्रोध रूपी अग्नि	क्रोधाग्नि	कर्मधारय समास
(ङ) युद्ध के लिए क्षेत्र	युद्धक्षेत्र	संप्रदान तत्पुरुष समास
(च) तीन कोणों का समाहार	त्रिकोण	द्विगु समास
(छ) कुल की परंपरा	कुल-परंपरा	संबंध तत्पुरुष समास
(ज) शिक्षा के लिए विभाग	शिक्षा विभाग	संप्रदान तत्पुरुष समास
(झ) सीधे और सादे	सीधे-सादे	द्वंद्व समास
(ञ) नीला है जो गगन	नीलगगन	कर्मधारय समास
(ट) मंत्रों का पाठ	मंत्रपाठ	संबंध तत्पुरुष समास
(ठ) अन्न को पूर्ण करती है जो	अन्नपूर्णा	बहुव्रीहि समास
(ड) जायदाद से हीन	जायदादरहित	अपादान तत्पुरुष समास
(ढ) हर घड़ी	घड़ी-घड़ी	अव्ययीभाव समास
(ण) विद्या रूपी धन	विद्याधन	कर्मधारय समास
(त) परम है जो ईश्वर	परमेश्वर	कर्मधारय समास
(थ) रोग से रहित	रोगरहित	अपादान तत्पुरुष समास
(द) बुरे हैं कर्म जिसके	कुकर्मी	कर्मधारय समास
(ध) निधि का पति	निधिपति	संबंध तत्पुरुष समास
(न) शूल है पाणि में जिसके	शूलपाणि	बहुव्रीहि समास

4. (क) प्रत्येक व्यक्ति को अक्षरों का ज्ञान होना अत्यावश्यक है।
(ख) प्रत्येक परिवार पर अन्न को पूरा करती है जो, उसकी कृपा बनी रहे।
(ग) आत्म (स्वयं) का विश्वास होना ही चाहिए।
(घ) जेब को कतरने वाले ने मेरा पर्स चुरा लिया।
(ङ) सागर को रत्नों का आकर (भंडार) भी कहते हैं।
(च) मन से चाहा हुआ हमेशा प्राप्त नहीं होता।
(छ) यह प्रसाद कृष्ण के लिए अर्पण है।
(ज) सूरदास जन्म से अंधे थे।
(झ) पूर्ण परम है जो आत्मा एक ही है।
(ञ) अपने पर बीती हुई से लाभ उठाने वाले भविष्य में कभी नहीं हारते।
(ट) कृष्ण (काला) है जो सर्प प्रायः विषैला होता है।
(ठ) जीवन के संग्राम में धैर्यवान ही विजयी होता है।
(ड) ध्रुव सदैव बंधन से मुक्त रहना चाहता है।
(ढ) यह बीमा योजना केवल सेवा से निवृत्त लोगों के लिए है।
(ण) प्रतीक्षा के लिए आलय (घर) में बैठकर अगली गाड़ी की प्रतीक्षा करें।
(त) प्राची में अरुण (लाल) रंग का सूर्य उदित हो रहा है।
(थ) हनुमान वायु के पुत्र थे।
(द) रवींद्रनाथ को कवियों का गुरु कहा जाता है।
(ध) आपके सम्मुख मैं नत हुआ मस्तक हूँ।

5. (क) पुजारी पीतांबर पहनकर पूजा कर रहे हैं।
(ख) मैं नीलकंठ (अर्थात शिव) की पूजा करता हूँ।
(ग) मीरा ने गोपाल को अपना सर्वस्व मान लिया था।
(घ) उसकी बात सुनकर प्रताप के मन में क्रोधाग्नि भड़क उठी।
(ङ) दहीबड़ा मुझे पसंद है।
(च) हम भारतवासी हैं।
(छ) शुभ भावना से किया गया कार्य सदैव निर्विघ्न होता है।
(ज) विश्वभारती रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित एक शिक्षा केंद्र है।
(झ) श्रीकृष्ण घनश्याम भी थे।
(ञ) निरक्षरों के लिए अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था की गई है।
(ट) वायुपूर्ण वातावरण स्वास्थ्यकर होता है।
(ठ) क्षुद्रमार्ग पर चलोगे तो कैसे कल्याण होगा।
(ड) कंप्यूटर के कारण ही तो नव जागरण हो रहा है।
(ढ) गंगा का जल अपवित्र नहीं होता।
(ण) राम सर्वप्रिय हैं।

(त) मेरा परीक्षा केंद्र अपना विद्यालय ही है।

(थ) अर्जुन सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर थे।

(द) अपने वचनों की रक्षा करना हमारी कुल परंपरा है।

(ध) मतदान लोकतंत्र का आधार है।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नोत्तर

1.	(क)	चतुर्भुज	–	चार भुजाओं का समूह	–	द्विगु समास
		उद्योगपति	–	उद्योग का पति	–	तत्पुरुष समास
		सिरदर्द	–	सिर का दर्द	–	तत्पुरुष समास
		त्रिवेणी	–	तीन वेणियों का समूह	–	द्विगु समास
	(ख)	हँसमुख	–	हँसता हुआ है जिसका मुख	–	बहुव्रीहि समास
		आसमुद्र	–	समुद्र तक	–	अव्ययीभाव समास
		प्रसंगानुकूल	–	प्रसंग के अनुकूल	–	तत्पुरुष समास
		धूपदीप	–	धूप और दीप	–	द्वंद्व समास
	(ग)	भला-बुरा	–	भला और बुरा	–	द्वंद्व समास
		शोकातुर	–	शोक से आतुर	–	कर्म तत्पुरुष समास
		सतसई	–	सत (सौ) पदों का समूह	–	द्विगु समास
		रामभक्ति	–	राम की भक्ति	–	तत्पुरुष समास
	(घ)	गरुड़वाहन	–	गरुड़ है वाहन जिसका	–	बहुव्रीहि समास
		राजा-रानी	–	राजा और रानी	–	द्वंद्व समास
	(ङ)	दहेज-प्रथा	–	दहेज की प्रथा	–	तत्पुरुष समास
		महात्मा	–	महान है जो आत्मा	–	कर्मधारय समास
		जनहित	–	जन के लिए हित	–	संप्रदान तत्पुरुष समास
		मधुरफल	–	मधुर है जो फल	–	कर्मधारय समास
	(च)	चिंतारहित	–	चिंता से रहित	–	तत्पुरुष समास
		शुभदिन	–	शुभ है जो दिन	–	कर्मधारय समास
	(छ)	वाद्ययंत्र	–	वाद्य का यंत्र	–	तत्पुरुष समास
		न्यायालय	–	न्याय का आलय	–	तत्पुरुष समास
	(ज)	अन्नजल	–	अन्न और जल	–	द्वंद्व समास
		समाचार-वाचन	–	समाचार का वाचन	–	संबंध तत्पुरुष समास

2.		**समस्त पद**	**समास का नाम**
(क)	मन से गढ़ी हुई	मनगढ़ंत	तत्पुरुष समास
	पठन के लिए शाला	पाठशाला	संप्रदान तत्पुरुष

(ख) सत्य के लिए आग्रह	सत्याग्रह	तत्पुरुष समास
रात–ही–रात में	रातोंरात	अव्ययीभाव समास
(ग) पढ़ाने–पढ़ने की शाला या घर	पाठशाला	तत्पुरुष समास
तीन भुजाओं का घर	त्रिभुज	द्विगु समास
(घ) पीत है जो अंबर	पीतांबर	कर्मधारय समास
चार मासों का समाहार	चौमासा	द्विगु समास
(ङ) बैलों वाली गाड़ी	बैलगाड़ी	तत्पुरुष समास
दो पहरों का समाहार	दोपहर	द्विगु समास
(च) शास्त्र में प्रवीण	शास्त्रप्रवीण	तत्पुरुष समास
खट्टा और मीठा	खट्टा–मीठा	द्वंद्व समास
(छ) संगीत में निपुण	संगीत निपुण	तत्पुरुष समास
पुरुषों में उत्तम है जो	पुरुषोत्तम	तत्पुरुष समास
(ज) नौ रत्नों का समाहार	नवरत्न	द्विगु समास
सुंदर है जो लोचन	सुलोचना	बहुव्रीहि समास
(झ) नया है जो युवक	नवयुवक	कर्मधारय समास
ध्यान में मग्न	ध्यानमग्न	तत्पुरुष समास
(ञ) स्वप्न देखने वाला	स्वप्नदर्शी	अलुक तत्पुरुष समास
अपनी रक्षा	आत्मरक्षा	तत्पुरुष समास
(ट) माता का भक्त	मातृभक्त	तत्पुरुष समास
चाँद जैसा मुख	चंद्रमुख	कर्मधारय समास
(ठ) गंगा का जल	गंगाजल	तत्पुरुष समास
चंद्र जैसा मुख	चंद्रमुख	कर्मधारय समास
(ज) नत है जो मस्तक	नतमस्तक	कर्मधारय समास
दूसरों पर उपकार	परोपकार	तत्पुरुष समास

3. (क) स्त्री–पुरुष (ख) नील गाय (ग) दिन–रात

4. दिनभर–अव्ययीभाव समास तिराहा–द्विगु समास त्रिवेणी–द्विगु समास

5. (क) नीला है कंठ जिसका (ख) गंगाा और जमुना, हवन के लिए सामग्री

6. (क) सप्ताह–सात दिनों का समूह–द्विगु समास (ख) यथाक्रम–क्रम के अनुसार–अव्ययीभाव समास

7. (क) जन आंदोलन–तत्पुरुष समास
नीलकमल–कर्मधारय समास
(ख) नवनिधि–द्विगु समास
यथासमय–अव्ययीभाव समास

8. (क) ग्रंथकार–ग्रंथ को लिखने वाला–करण तत्पुरुष समास देशनिर्वासित–देश से निर्वासित–अपादान तत्पुरुष समास
सज्जन–सत् जन (अच्छा व्यक्ति)–कर्मधारय समास
(ख) (i) नभचर–तत्पुरुष समास (ii) सीमा प्रहरी–तत्पुरुष समास (iii) अष्टाध्यायी–द्विगु समास

9. (क) राजदूत–राज्य का दूत–तत्पुरुष समास धूप-दीप–धूप और दीप–द्वंद्व समास
(ख) यथामति–अव्ययीभाव समास त्रिगुण–द्विगु समास

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1.	(क) iii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iii
2.	(क) iii	(ख) ii	(ग) iii	(घ) i	(ङ) ii
3.	(क) i	(ख) iv	(ग) ii	(घ) iii	(ङ) ii

4. मुहावरे

1. (क) हरे कर रहे हो? (ख) दिखा रहे हो। (ग) फेर ली।
(घ) सिर खाए जा रहे हो, (ङ) घी डालने का काम किया। (च) सीधा कर लिया है।
(छ) नौ दो ग्यारह हो गया। (ज) का दूध याद आ जाएगा। (झ) लेकर ढूँढ़ने
(ञ) का ताड़ बना दिया। (ट) फूला न समाया (ठ) का दूध पानी का पानी
(ड) थैली के चट्टे-बट्टे हैं। (ढ) गगरी छलकत जाए। (ण) चाँद लगा दिया है।
(त) छिपा रुस्तम (थ) मुँह फेर लिया (द) अकल चकरा
(ध) कमर टूट (न) दाल का भाव पता चलेगा। (प) पकड़कर माफ़ी

2. (क) दूध पानी का पानी होना (ख) उड़ना (ग) गुम होना (घ) बँधना
(ङ) मेहनत करना (च) पकाना (छ) बाप बनाना (ज) निकलना
(झ) तमाशा देखना (ञ) रह जाना (ट) मरहम लगाना (ठ) उतरना
(ड) लगाना (ढ) फेंकना

3. (क) पानी-पानी होना – बहुत लज्जित होना
(ख) ठोकरें खाना – इधर-उधर भटकना
(ग) पेट में दाढ़ी होना – छोटा होने पर भी चालाक
(घ) धज्जियाँ उड़ाना – पूरी तरह नष्ट कर देना
(ङ) दाल में काला होना – संदेह की बात होना
(च) टका-सा जवाब देना – साफ़ इनकार कर देना
(छ) पहाड़ टूट जाना – भारी विपत्ति आना
(ज) ज़मीन पर पाँव न रखना – घमंड करना
(झ) चींटी के पर लगना – विनाश के लक्षण प्रकट होना
(ञ) भीगी बिल्ली बनना – डरकर दब जाना
(ट) तिल का ताड़ बनाना – छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना
(ठ) दीवार के भी कान होना – गोपनीय बात को सुने जाने की आशंका
(ड) माथा ठनकना – संदेह होना
(ढ) मुँह में पानी भर आना – जी ललचाना
(ण) दाँतों तले उँगली दबाना – आश्चर्यचकित होना
(त) बाल की खाल निकालना – व्यर्थ की आलोचना करना

4. (क) अयोग्य व्यक्ति को मूल्यवान वस्तु मिल जाना (ख) धोखा देना
(ग) जान की परवाह न करना (घ) असंभव कार्य करना
(ङ) बादलों या वर्षा का इंतज़ार करना (च) अत्यंत पढ़ाकू होना
(छ) अत्याचारी के दिन पूरे होना (ज) ज़रा भी अच्छा न लगना
(झ) घबरा जाना (ञ) पीछा छुड़ा लेना
(ट) बहुत खुश होना (ठ) अपव्यय करना
(ड) जीत हासिल कर लेना (ढ) झगड़े को और ज़्यादा बढ़ा देना
(ण) सिद्धांतहीन होना

5. (क) कुछ लोग दूसरों की राह में काँटे बिछाने का काम करते रहते हैं।
(ख) इस महँगाई में आदमी अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए कोल्हू का बैल बन गया है।
(ग) आज के नेता वोट लेकर जनता को उल्लू बनाते हैं।
(घ) दुकानदार कमीशन पर खुल्ले रुपये दे रहा था। बाद में जब उसे पता चला कि सौ का नोट नकली है तो वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।
(ङ) अध्यापक के जाते ही छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।
(च) कविवर बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।
(छ) जब से सोनू ने कॉलोनी में दो झपटमारों को पकड़वाया है तब से वह कॉलोनी वालों के गले का हार बना हुआ है।
(ज) एक करोड़ की लॉटरी लगने की बात सुनकर वह ज़मीन पर पैर नहीं रख रहा है।
(झ) श्रवण कुमार अपने वृद्ध माता-पिता के लिए अंधे की लाठी थे।
(ञ) मैं पार्क में कुछ लड़कों की बातों में आकर उनसे मोबाइल फ़ोन खरीदकर फँस गया। उस समय मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गए थे।
(ट) उधार रुपये ले जाने के बाद अब लौटाते समय वह अगर-मगर कर रहा है।
(ठ) चुनाव जीतकर मंत्री बनते ही नेता जी चैन की वंशी बजाने लगे।
(ड) जो लोग कान के कच्चे होते हैं, उनसे कोई गोपनीय बात नहीं बतानी चाहिए।
(ढ) जिस व्यक्ति से तुम अंग्रेज़ी में लिखा पता पूछ रहे हो, उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।
(ण) जिसे तुम अपना हितैषी समझते रहे, वही आस्तीन का साँप निकला।
(त) महाराणा प्रताप ने मुगलों की ईंट-से-ईंट बजा दी।
(थ) दिल्ली से दशहरी आम लखनऊ ले जाना उलटी गंगा बहाने जैसा है।
(द) अप्रेंटिस कर रहे युवाओं को ठेकेदार फैक्ट्री में अपनी उँगलियों पर नचाते हैं।
(ध) 'नीट' परीक्षा पास करने के लिए उसने आकाश-पाताल एक कर दिया।
(न) गहने साफ़ करने वाला आँखों में धूल झोंककर असली गहने लेकर चला गया।
(प) हीरा और मोती ने मिलकर शक्तिशाली साँड को मार गिराया। सच है एक और एक ग्यारह होते हैं।
(फ) वीर सिर पर कफ़न बाँधकर देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं।
(ब) उदय को उपहार में मिली 'फार्च्यूनर' कार देखकर उसके पड़ोसी के कलेजे पर साँप लोट गया।
(भ) बीती बातें याद दिलाकर उसने रमा के जले पर नमक छिड़कने का प्रयास किया।
(म) अध्यापक के बार-बार समझाने पर भी कई लापरवाह छात्रों के कानों पर जूँ नहीं रेंगी।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नोत्तर

1. (क) किसी भारी संकट से घिरा होना (ख) मायूस हो जाना
2. (क) तले अंगूली दबाकर (ख) हवाइयाँ उड़ने (ग) आँखों में धूल
(घ) कलई (ङ) पर खेलकर जान बचाई (च) जान पर
(छ) खड़े हो (ज) उल्लू (झ) आसमान सिर पर उठा
(ञ) ईंट-से-ईंट बजा (ट) पसीने आ (ठ) आँख में धूल
(ड) सुध-बुध खोने (ढ) दाँतों पसीना

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

1. (क) iii (ख) ii (ग) ii (घ) iv (ङ) ii
2. (क) iv (ख) ii (ग) iv (घ) ii (ङ) iii
(च) i (छ) ii (ज) ii (झ) ii (ञ) i

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–1

1.	(क) iii	(ख) iii	(ग) i	(घ) iv	(ङ) iii
2.	(क) ii	(ख) i	(ग) ii	(घ) i	(ङ) i
3.	(क) iii	(ख) ii	(ग) ii	(घ) iv	(ङ) iii
4.	(क) i	(ख) iii	(ग) i	(घ) iv	

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–2

1.	(क) i	(ख) iv	(ग) i	(घ) iii	(ङ) iv
2.	(क) ii	(ख) iii	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iii
3.	(क) i	(ख) iii	(ग) iii	(घ) iii	(ङ) iii
4.	(क) iv	(ख) iii	(ग) ii	(घ) i	

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–3

1.	(क) iii	(ख) ii	(ग) i	(घ) iv	(ङ) ii
2.	(क) iii	(ख) ii	(ग) iii	(घ) iii	(ङ) iii
3.	(क) iii	(ख) i	(ग) ii	(घ) iv	(ङ) i
4.	(क) ii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) ii	

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–4

1.	(क) i	(ख) i	(ग) iii	(घ) ii	(ङ) i
2.	(क) i	(ख) i	(ग) i	(घ) ii	(ङ) i
3.	(क) iii	(ख) i	(ग) iii	(घ) i	(ङ) iii
4.	(क) ii	(ख) iv	(ग) iv	(घ) i	

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–5

1.	(क) i	(ख) ii	(ग) iv	(घ) iii	(ङ) ii
2.	(क) ii	(ख) i	(ग) ii	(घ) iv	(ङ) iii
3.	(क) iii	(ख) ii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) iii
4.	(क) iv	(ख) ii	(ग) iv	(घ) iii	

1. अनुच्छेद-लेखन

1. जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान

लक्ष्मण जी कहते हैं कि "लंका स्वर्ण द्वारा निर्मित है इसके उपरांत भी मेरी इसमें कोई रुचि नहीं है क्योंकि जननी (माता) एवं जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक महान है।" आजकल लक्ष्मण जी द्वारा कहे गए इन वचनों का पालन स्वयं यह प्रकृति कठोरता से करा रही है। सभी मनुष्य अपनी जन्मभूमि को छोड़कर अनेक स्थानों पर धन अर्जित करने के लिए चले जाते हैं जबकि वे सभी चाहते तो अपनी जन्मभूमि को ही स्वर्ग बना सकते थे परंतु उन्होंने सरल मार्ग का चयन करके इसे अनदेखा कर दिया। उसी का शिक्षण यह प्रकृति सभी को अब कठोरतापूर्वक समझा रही है। मैं इस सत्य को स्वीकार करता हूँ कि सभी को अपना भरण-पोषण करने के लिए धन की आवश्यकता है परंतु उतना ही धन जितने में कोई मनुष्य ठीक प्रकार से अपना भरण-पोषण कर सके, परंतु आजकल लोगों की कामनाएँ उससे कहीं अधिक बढ़ गई हैं। आजकल लोग मात्र धन के ही पीछे भाग रहे हैं। उनके लिए तो धन ही सर्वोपरि हो गया है। श्रीमद्भगवद् पुराण के द्वादश स्कंध में कलियुग में होने वाले अनेक अनैतिक कार्यो का वर्णन किया गया है। जिसमें यह भी शामिल है की जिसके पास धन होगा उसी का सम्मान होगा न कि किसी ज्ञानी का। आप सभी चाहें तो अपनी जन्मभूमि को ही स्वर्ग बना सकते हैं परंतु इसके लिए आपने जिस स्थान पर जन्म लिया है आप सभी को वहीं रहना होगा और अपने उत्तम श्रम द्वारा ही उस स्थान का निर्माण करना होगा। सभी अनावश्यक कामनाओं का त्याग करके, स्वयं विचार कीजिएगा कि आप सभी को क्या करना है? परंतु उससे पूर्व मेरी इस बात पर ध्यान अवश्य दीजिएगा की इस प्रकृति एवं समय से अधिक शक्तिशाली कोई नहीं। इस कारणवश आपको जो कुछ भी करना हो अवश्य कीजिएगा परंतु इस बात का ध्यान रखकर की आप सभी को प्रकृति के नियमों का कठोरता से पालन करना होगा क्योंकि जो कोई भी इस प्रकृति के साथ खेलने का प्रयत्न करेगा अर्थात इसके साधनों का अपने स्वार्थ के अधीन होकर दुरुपयोग करेगा। तब-तब उचित समय पर यह प्रकृति अपने रौद्र स्वरूप को अवश्य धारण करके सभी को इसका ज्ञान अवश्य देगी।

2. प्लास्टिक की दुनिया

सुबह उठने से लेकर देर रात सोने तक हम जिन वस्तुओं का उपयोग करते हैं, उन वस्तुओं में ज़्यादातर सभी प्लास्टिक की बनी होती हैं। विज्ञान के चमत्कारों से हम सभी भली-भांति परिचित हैं। विज्ञान ने ही अनेक कृत्रिम धातुओं, पदार्थों तथा तत्वों का निर्माण किया है, जिसमें से प्लास्टिक एक है। प्लास्टिक आज के संसार का महत्वपूर्ण पदार्थ है। या यूँ कह सकते हैं आज का युग प्लास्टिक का युग है। सुबह के टूथब्रश से लेकर हमारी स्कूटर, कार की बॉडी तक हर जगह प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है। आज बच्चों के खिलौने, क्रॉकरी, फर्नीचर आदि सभी में प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है। आज प्लास्टिक के बिना मानव जीवन असंभव-सा प्रतीत होता है। इसके उपयोग का विशेष कारण है, इसका तापरोधक होना, आवाज कम करना व किसी भी फ्रेम में आसानी से ढल जाना तथा इसे पिघलाकर इसमें विशेष रंग भर सकते हैं, साथ ही साथ यह वाटरप्रूफ भी होती है। मज़बूती में यह पत्थर और स्टील की तरह मज़बूत होती है तथा लचक में रबर जैसी लचीली होती है। इसमें दीमक और जंग भी नहीं लगती है और हम सभी को बाज़ार में इससे बने हुए सामान काफ़ी सस्ते में मिल जाते हैं। प्लास्टिक का प्रयोग परिधानों, वस्त्रों, घर व रेस्त्रां में उसे रंग-बिरंगा एवं सुंदर बनाने में भी किया जाता है। जब बात हम प्लास्टिक की करते हैं, तो भारतवर्ष में आई०पी०सी०एल० नामक संस्था का योगदान महत्वपूर्ण है। प्लास्टिक जगत में जो क्रांति आई उसका श्रेय जाता है, आई०पी०सी०एल० के चेयरमैन तथा एम०डी० डॉ० वर्धराजन को। उन्होंने प्लास्टिक के संसार में ऐसी क्रांति उत्पन्न की, भारतवर्ष में उनका नाम हमेशा इस क्षेत्र से जुड़ा रहेगा। प्लास्टिक में सहस्त्रों गुण हैं, लेकिन उसका एक दुर्गुण काफ़ी खतरनाक है, प्लास्टिक का कभी मिट्टी न बन पाना और पंच महाभूतों से बना ये संसार और इस संसार की कोई भी वस्तु अंततः मिट्टी में नहीं मिल पाती तो वह धरती के लिए खतरा बन जाती है। प्लास्टिक के दुरूपयोग से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है इसका सबसे विकृत रूप पोलीथीन बैग के रूप में दिखाई देता है। माता कही जाने वाली गाय प्लास्टिक में फेंके गए अन्न एवं छिलकों को बैग सहित खा जाती है। गायों की जब मृत्यु होती है, उनके पेट से प्लास्टिक बैग की ये पोटलियाँ निकलती हैं। प्लास्टिक यदि

संसार के लिए लाभकारी है तो हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम इसका उपयोग कैसे करें, नहीं तो भस्मासुर वाली कहावत सिद्ध हो सकती है।

3. आधार कार्ड मेरी पहचान

आधार कार्ड भारत सरकार द्वारा भारत के नागरिकों को जारी किया जाने वाला पहचान-पत्र है। इसमें 12 अंकों की एक विशिष्ट संख्या छपी होती है जिसे भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (भा॰वि॰प॰प्रा॰) जारी करता है। यह संख्या, भारत में कहीं भी, व्यक्ति की पहचान और पते का प्रमाण होगा। भारतीय डाक द्वारा प्राप्त और यू॰आई॰डी॰ए॰आई॰ की वेबसाइट से डाउनलोड किया गया ई-आधार दोनों ही समान रूप से मान्य हैं। कोई भी व्यक्ति आधार के लिए नामांकन करवा सकता है, बशर्ते वह भारत का निवासी हो और यू॰आई॰डी॰ए॰आई॰ द्वारा निर्धारित सत्यापन प्रक्रिया को पूरा करता हो, चाहे उसकी उम्र और लिंग (जेंडर) कुछ भी हो। प्रत्येक व्यक्ति केवल एक बार नामांकन करवा सकता है। नामांकन निःशुल्क है। आधार कार्ड एक पहचान-पत्र मात्र है तथा यह नागरिकता का प्रमाणपत्र नहीं है। आधार दुनिया की सबसे बड़ी बॉयोमीट्रिक आईडी प्रणाली है। विश्व बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री पॉल रोमर ने आधार को 'दुनिया में सबसे परिष्कृत आईडी कार्यक्रम' के रूप में वर्णित किया। आधार कार्ड निवास का सबूत माना जाता है, यह नागरिकता का सबूत नहीं है। आधार स्वयं भारत में निवास के लिए कोई अधिकार नहीं देता है। जून 2017 में गृह मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि आधार नेपाल और भूटान यात्रा करने वाले भारतीयों के लिए वैध पहचान दस्तावेज नहीं है। तुलना के बावजूद, भारत की आधार परियोजना संयुक्त राज्य अमेरिका के सोशल सिक्योरिटी नंबर की तरह नहीं है क्योंकि इसमें अधिक उपयोग और कम सुरक्षा है।

4. सोशल मीडिया

सोशल मीडिया एक ऐसा मीडिया है, जो बाकी सारे मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और समानांतर मीडिया) से अलग है। सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफॉर्म (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम) आदि का उपयोग कर पहुँच बना सकता है। आज के दौर में सोशल मीडिया ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है, जिसके बहुत सारे फीचर हैं, जैसे कि सूचनाएँ प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित करना मुख्य रूप से शामिल हैं। सोशल मीडिया एक अपरंपरागत मीडिया है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे इंटरनेट के माध्यम से पहुँच बना सकते हैं। सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है। यह द्रुत गति से सूचनाओं के आदान-प्रदान करने, जिसमें हर क्षेत्र की खबरें होती हैं, को समाहित किए होता है। सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका अदा करता है जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए हैं जिनसे कि लोकतंत्र को समृद्ध बनाने का काम हुआ है जिससे किसी भी देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता, समाजवादी गुणों में अभिवृद्धि हुई है। हम ऐसे कई उदाहरण देखते हैं, जो कि उपरोक्त बातों को पुष्ट करते हैं जिनमें 'India Against Corruption' को देख सकते हैं, जो कि भ्रष्टाचार के खिलाफ़ महाअभियान था जिसे सड़कों के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी लड़ा गया जिसके कारण विशाल जनसमूह अन्ना हजारे के आंदोलन से जुड़ा और उसे प्रभावशाली बनाया। सन 2014 के आम चुनाव के दौरान राजनीतिक पार्टियों ने जमकर सोशल मीडिया का उपयोग कर आम जन को चुनाव के लिए जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। इस आम चुनाव में सोशल मीडिया के उपयोग से वोटिंग प्रतिशत बढ़ा, साथ-ही-साथ युवाओं में चुनाव के प्रति जागरूकता बढ़ी। सोशल मीडिया के माध्यम से ही निर्भया को न्याय दिलाने के लिए विशाल संख्या में युवा सड़कों पर आ गए जिससे सरकार दबाव में आकर एक नया एवं ज्यादा प्रभावशाली कानून बनाने पर मज़बूर हो गई। लोकप्रियता के प्रसार में सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म है, जहाँ व्यक्ति स्वयं को अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है। आज फ़िल्मों के ट्रेलर, टी॰वी॰ प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है। वीडियो तथा ऑडियो चैट भी सोशल मीडिया के माध्यम से सुगम हो पाई है, जिनमें फेसबुक, व्हॉट्सऐप, इंस्टाग्राम कुछ प्रमुख प्लेटफॉर्म हैं।

5. क्षमा : एक साहसिक कदम

मानव जीवन में क्षमा का क्या महत्व है? सभ्य समाज में क्षमायाचना और क्षमादान का विशेष महत्व है। क्षमायाचना और क्षमादान चाहे दो आत्मीय जनों के बीच हो अथवा समूहों या राष्ट्रों के बीच। यदि ईमानदारी के साथ क्षमायाचना की जाती है, तो यह अपमान की भावना का निराकरण करती है। क्षमा में बहुत बड़ी शक्ति होती है। क्षमाशीलता का भारी महत्व है, पर हम इसके

बारे में बहुत कम ध्यान देते हैं। अपने बच्चों में क्षमाशीलता की भावना पैदा करने का हम कोई उपाय नहीं करते। क्या कारण है कि ज्यादातर लोग क्षमाशीलता को अपनाना नहीं चाहते? असल में, हममें से बहुत से लोग हमेशा जीतते रहने, सफलता प्राप्त करने और हर काम को चुस्त-दुरुस्त ढंग से करने की भावना से इतना ओतप्रोत रहते हैं कि क्षमाशीलता के महत्व को समझ ही नहीं पाते। उस ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। क्षमायाचना करने के लिए हममें अपनी गलती, असफलता और कमजोरी को स्वीकार करने की क्षमता होनी जरूरी है। पर निरंतर जीत के लिए हम इतने आतुर होते हैं कि अपनी गलतियों और कमजोरियों को स्वीकार करने की हमें फुरसत ही नहीं मिलती। क्षमायाचना कितनी असरकारी है? ईमानदारी से मांगी गई क्षमायाचना वांछित प्रभाव डालती है। क्या क्षमायाचना के सही व गलत तरीके भी होते हैं? यदि सही ढंग से क्षमा नहीं मांगी गई तो वह प्रभावहीन हो जाती है। सही क्षमायाचना तब होती है, जब हम स्पष्ट शब्दों में अपनी गलती को रेखांकित कर क्षमा मांग लेते हैं। सही क्षमायाचना का एक और तत्व है। वह यह है कि हम स्पष्ट कर देते हैं कि किन कारणों से, किन परिस्थितियों में हमसे यह व्यवहार हुआ। हमारी क्षमायाचना से यह जाहिर हो जाना चाहिए कि वास्तव में हम अपने व्यवहार पर दुखी हैं। यह व्यवहार कटुता दूर करके संबंधों को तत्काल सामान्य बना देता है। क्या क्षमा मांगना कमजोरी का प्रतीक नहीं है? लोग क्षमायाचना को दुर्बलता का पर्याय समझ लेते हैं। जबकि क्षमायाचना शक्ति का प्रतीक होती है। यह ईमानदारी की भी परिचायक है। क्षमायाचना के लिए चारित्रिक दृढ़ता भी जरूरी है। क्षमा मांगकर हालांकि हम अपनी दुर्बलता जाहिर करते हैं, पर साथ ही यह भी स्पष्ट करते हैं कि कुछ भी हो, मैं एक अच्छा आदमी हूँ, दिल का बुरा नहीं।

6. भ्रूण हत्या–सामाजिक कलंक

'भ्रूण हत्या' से तात्पर्य है–जब किसी महिला के गर्भ में भ्रूण पल रहा हो, तब उसका परीक्षण करवाकर जन्म लेने से पहले ही भ्रूण को मार डालना। इसका अर्थ हुआ कि गर्भस्थ पुत्री की हत्या कर देना। इसके पीछे बीमार मानसिकता होती है। इसके कारण कई राज्यों में लिंगानुपात में भारी गिरावट आई है। वैसे तो हमारी संस्कृति में नारी की पूजा की बात की जाती है, पर अभी तक हमारे समाज में नारी के प्रति सम्मान का भाव पूरी तरह से उत्पन्न नहीं हुआ है। हमारा समाज अभी भी पुत्रमोह में अंधा होकर 'कन्या भ्रूण हत्या' जैसा कुकर्म कर बैठता है। इस प्रकार के कार्य में नारी के प्रति उसकी दूषित मानसिकता का परिचय मिलता है। यह एक अनैतिक कार्य है। उसके इस काम में अनेक लोभी डॉक्टर भी मदद करते हैं। वे अपने तुच्छ स्वार्थ की पूर्ति हेतु सरकारी कानून की भी परवाह नहीं करते। कन्या भ्रूण हत्या के कई कारण हैं। भारतीय समाज में बेटी को पराया धन माना जाता है। उसे सदैव बेटे से कमतर आँका जाता है। दहेज का बढ़ता चलन भी कन्या भ्रूण हत्या के लिए दोषी है। कन्या को पिता की संपत्ति में बराबरी का हक न मिल पाए, इसके लिए भी यह दुष्कर्म किया जाता है। पुत्र को परिवार की कमाई का माध्यम माना जाता है और पुत्री को खर्च का। कन्या भ्रूण हत्या का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह हुआ कि लड़कों के अनुपात में लड़कियों की संख्या कम हुई। हरियाणा में तो यह स्थिति और भी खराब है। वहाँ 1000 लड़कों के मुकाबले 850 लड़कियाँ ही रह गई हैं। अब सरकार के प्रयासों से इस स्थिति में सुधार आया है। हमें कन्या भ्रूण हत्या को पूरी ताकत के साथ रोकना होगा। कन्या को भी जन्म लेने का बराबर अधिकार है। सरकार का अभियान 'बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ' इसी प्रयास की ओर एक कदम है। कानून के साथ-साथ जन-चेतना भी जगानी होगी। कन्या भ्रूण हत्या के दोषियों को कठोर दंड मिलना चाहिए। हमें इस सामाजिक कलंक को मिटाना ही होगा।

7. राष्ट्रीय एकता

देश में प्रगति, शांति और सुरक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एकता बहुत ही जरूरी है। हमारा देश विभिन्न धर्म और जाति के भेद-भाव के चलते एकता के पाठ को भूल-सा गया है। कहीं अमीरी-गरीबी की लक्ष्मण रेखा तो कही उत्तर-दक्षिण का भेद, कहीं मैं हिंदू–वह मुस्लिम तो कहीं मैं ब्राह्मण–वह छोटी जाति का। इन्हीं विविधताओं ने हमें एक दूसरे से दूर कर दिया है, जिस वजह से राष्ट्र कमजोर पड़ जाता है और प्रगति में रुकावट आती है। इन भिन्न-भिन्न त्रासदियों से ऊपर उठकर और एकजुट होकर राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जाने में हाथ बँटाना चाहिए। क्या हर वर्ग के लोग मिलजुलकर सलमान खान की पिक्चर और सचिन तेंदुलकर के शतक का इंतज़ार नहीं करते। देश की सीमाओं पर जब कोई खतरा मंडराता है तो सब धर्म जाति भूलकर एकजुट हो सेना का साथ नहीं देते। अगर यह सब करते हैं तो क्यों न एकता के बंधन में बंधकर हम अपने राष्ट्र को उन्नति और शांति के नए शिखर पर ले चलें। यह एकता तभी संभव होगी जब हम सब भेदों को भुला संगठित हो राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देंगे।

8. **मेरी प्रिय फ़िल्म**

मुझे फ़िल्में देखना बहुत पसंद है। मैंने आज तक सैकड़ों फ़िल्में देखी हैं। राजकपूर, देवानंद एवं दिलीप कुमार जैसे पुराने अभिनेताओं से लेकर वर्तमान नायकों आमिर खान, अक्षय कुमार तक की फ़िल्में मैंने देखी हैं। अमिताभ बच्चन की 'शोले', सलमान खान की 'हम आपके हैं कौन', आमिर खान की 'थ्री इडियट्स', ऋषि कपूर की 'हिना', सैफ अली खान की 'लव आजकल' जैसी फ़िल्में मुझे काफ़ी अच्छी लगीं। इसके अतिरिक्त वर्तमान फ़िल्मों में 'जय हो', 'किक' एवं 'हाई-वे' भी मेरी पसंदीदा फ़िल्में हैं। मेरी प्रिय फ़िल्मों की सूची लंबी है। इनमें से कौन सबसे अच्छी है, इसका चुनाव करना मेरे लिए काफ़ी मुश्किल है, किंतु इन सभी फ़िल्मों में फ़िल्म 'दोस्ती' को मैं अपनी सबसे प्रिय फ़िल्म कहूँ, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। राजश्री प्रोडक्शन द्वारा निर्मित यह फ़िल्म कहानी, गीत-संगीत, अभिनय हर पैमाने पर बिल्कुल खरी उतरती है। 'दोस्ती' फ़िल्म 1964 ई॰ में रिलीज हुई थी। इसमें संजय खान, लीला चिटनिस, सुधीर कुमार, सुशील कुमार, बेबी फरीदा जलाल इत्यादि कलाकारों ने अभिनय किया है। सुधीर कुमार एवं सुशील कुमार मुख्य भूमिका में हैं। इस फ़िल्म के गीत मजरूह सुल्तानपुरी ने लिखे हैं तथा संगीत दिया था लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने। इस फ़िल्म का निर्देशन सत्येन बोस ने किया था। फ़िल्म 'दोस्ती' की कहानी इस प्रकार है—रामू (सुशील कुमार) अपने माँ-बाप की इकलौती संतान है, जो 'माउथ ऑर्गन' बजाने में माहिर एवं पढ़ाई-लिखाई में तेज़ है। उसके पिता जी एक फैक्ट्री में काम करते हैं। काम करते हुए एक दिन उनकी मौत हो जाती है। यह हिंदी सिनेमा की पहली ऐसी फ़िल्म थी, जो प्रेमी-प्रेमिका के प्रेम पर आधारित न होने के बावजूद सुपर हीट रही थी। राजश्री प्रोडक्शन की फ़िल्मों की सबसे बड़ी विशेषता उनका संगीतमय एवं पारिवारिक होना होता है।

9. **छात्र स्वयं करें।**

10. **बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत**

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसके जीवन में सुख-दुख का आना-जाना लगा रहता है। उसके अलावा दिन-प्रतिदिन की समस्याएँ उसे तनावग्रस्त करती हैं। इससे मुक्ति पाने के लिए वह अपने मन की बातें किसी से कहना-सुनना चाहता है। ऐसे में उसे अत्यंत निकटस्थ व्यक्ति की जरूरत महसूस होती है। इस जरूरत को मित्र ही पूरी कर सकता है। मनुष्य को मित्र की आवश्यकता सदा से रही है और आजीवन रहेगी। जीवन में मित्र की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को पड़ती है। एक सच्चा मित्र औषधि के समान होता है जो व्यक्ति की बुराइयों को दूर कर उसे अच्छाइयों की ओर ले जाता है। मित्र ही सुख-दुख के वक्त साथ देता है। वास्तव में मित्र के बिना सुख की कल्पना नहीं की जा सकती है। इतिहास में अनेक उदाहरण भरे हैं जिनसे मित्रता करने और उसे निभाने की सीख मिलती है। वास्तव में मित्र बनाना तो सरल है पर उसे निभाना अत्यंत कठिन है। देखा गया है कि आर्थिक समानता न होने पर भी दो मित्रों की मित्रता आदर्श बन गई, जिसकी सराहना इतिहास भी करता है। राणाप्रताप और भामाशाह की मित्रता, कृष्ण और अर्जुन की मित्रता, राम और सुग्रीव की मित्रता, दुर्योधन और कर्ण की मित्रता कुछ ऐसे ही उदाहरण हैं। इनकी मित्रता से हमें प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए, क्योंकि इन मित्रों के बीच स्वार्थ आड़े नहीं आया। ऐसा देखा जाता है कि छात्रावस्था या युवावस्था में मित्र बनाने की धुन सवार रहती है। बस एक दो-बार किसी से बातें किया, साथ-साथ नाश्ता किया, फिल्म देखी, हँसमुख चेहरा देखा, अपनी बात में हाँ में हाँ मिलाते देखा और मित्र बना लिया पर ऐसे मित्र जितनी जल्दी बनते हैं, संकट देख उतनी ही जल्दी साथ छोड़कर दूर भी हो जाते हैं। जीवन में सच्चे मित्र का बहुत महत्व है। एक सच्चे मित्र का साथ व्यक्ति को उन्नति के पथ पर ले जाता है और बुरे व्यक्ति का साथ पतन की ओर अग्रसर करता है। सच्चा मित्र जहाँ व्यक्ति को अवगुणों से बचाकर सदगुणों की ओर ले जाता है वहीं कपटी मित्र हमारे पैरों में बँधी चक्की के समान होता है जो हमें पीछे खींचता रहता है। यदि हमारा कोई मित्र जुआरी या शराबी निकला तो उसका प्रभाव एक न एक दिन हम पर अवश्य पड़ना है। इसके विपरीत सच्चा मित्र सुमार्ग पर ले जाता है। सच्चा मित्र अपने मित्र को कुसंगति से बचाकर सन्मार्ग पर ले जाता है और उसके गुणों को प्रकटकर सबके सामने लाता है। मित्रता अनमोल वस्तु है जो जीवन में कदम-कदम पर काम आती है। एक सच्चा मित्र मिल जाना गर्व एवं सौभाग्य की बात है। जिसे सच्चा मित्र मिल जाए, उसे सुख का खजाना मिल जाता है। हमें मित्र बनाने में सावधानी बरतना चाहिए। एक सच्चा मित्र मिल जाने पर मित्रता का निर्वहन करना चाहिए। सच्चे मित्र के रूठने पर उसे तुरंत मना लेना चाहिए। हमें भी मित्र के गुण बनाए रखना चाहिए, क्योंकि कहा भी गया है—विपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।

11. पर्वतारोहण

पहाड़ की चढ़ाई ने लंबे समय से साहसिक साधकों को मोहित किया है। अधिक-से-अधिक पर्वतारोहण पर्वतों के विकास के साथ, इन दिनों लोगों को इस रोमांचक खेल का अनुभव करने का अधिक मौका मिल रहा है। जो लोग पर्वतारोहण करने के लिए पर्याप्त साहस नहीं कर रहे हैं, लेकिन अभी भी इसी तरह के रोमांच का अनुभव करने के लिए तरस रहे हैं, वे इसके एक छोटे संस्करण के लिए जा सकते हैं जो रॉक क्लाइबिंग है। जबकि पहाड़ पर चढ़ना अधिक चुनौतीपूर्ण और खतरनाक है और इसके लिए अधिक ध्यान और दृढ़ विश्वास की आवश्यकता होती है, चट्टान पर चढ़ना कम जोखिम भरा होता है क्योंकि व्यक्ति को चट्टान पर चढ़ना आवश्यक होता है जो पहाड़ जितना ऊँचा नहीं होता। रॉक क्लाइम्बिंग में बहुत अधिक कौशल की आवश्यकता नहीं होती है और आपको गाइड के निर्देशों की मदद से भी किया जा सकता है, भले ही आपको खेल के बारे में कोई पूर्व जानकारी न हो। हालांकि, पर्वतारोहण के लिए जाने की योजना बनाने वालों को इस बारे में जानकारी जुटानी चाहिए कि इस खेल को कैसे किया जाता है और इसमें कौन-कौन से जोखिम शामिल हैं। यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि आप इस खेल में शामिल होने के लिए शारीरिक रूप से फिट हैं। किसी ऐसे व्यक्ति से बात करना उचित है जो इस साहसिक खेल को लेने की योजना बनाने से पहले पहाड़ पर चढ़ने के पहले अनुभव को प्रस्तुत कर सकता है। मैंने रॉक क्लाइंबिंग की कोशिश की है और अनुभव कमाल का था। मैं पहाड़ पर चढ़ने की भी कोशिश करना चाहूँगा लेकिन मुझे पहले इसके लिए पर्याप्त साहस जुटाने की जरूरत है।

12. आधुनिक शिक्षा और रोज़गार

सामान्य रूप से कहा और माना जा सकता है कि शिक्षा और रोज़गार का आपस में कोई संबंध नहीं है। शिक्षा का मूल प्रयोजन और उद्देश्य व्यक्ति की सोई शक्तियाँ जगाकर उसे सभी प्रकार से योज्य और समझदार बनाना है। रोज़गार की गारंटी देना शिक्षा का काम या उद्देश्य वास्तव में कभी नहीं रहा, यद्यपि आरंभ से ही व्यक्ति अपनी अच्छी शिक्षा-दीक्षा के बल पर अच्छे-अच्छे रोज़गार भी पाता आ रहा है। परंतु आज पढ़ने-लिखने या शिक्षा पाने का अर्थ ही यह लगाया जाने लगा है कि ऐसा करके व्यक्ति रोज़ी-रोटी कमाने के योग्य हो जाता है। दूसरे शब्दों में आज शिक्षा का सीधा संबंध तो रोजगार के साथ जुड़ गया है, पर शिक्षा को अभी तक रोज़गारोन्मुख नहीं बनाया जा सका। स्कूलों-कॉलेजों में जो और जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती है, वह व्यक्ति को कुछ विषयों के नामादि स्मरण कराने या साक्षर बनाने के अलावा कुछ नहीं कर पाती। परिणामस्वरूप साक्षरों के लिए क्लर्की, बाबूगीरी आदि के जो थोड़े या धंधे, नौकरियाँ आदि हैं, व्यक्ति पा जाता है। अत: उसमें सुधार लाया जाना आवश्यक है। सुधार लाते समय इस बात का ध्यान रखा जा सकता है कि शिक्षा को रोज़गारोन्मुख कैसे बनाया जाए? देश-विदेश में आज जो भिन्न प्रकार के तकनीक विकसित हो गए या हो रहे हैं, उन सबको शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए। कविता, कहानी और साहित्यिक विषयों का भाषा-शास्त्र आदि का गूढ़-ज्ञान केवल उन लोगों के लिए सुरक्षित रखा जाना चाहिए जो इन विषयों में स्वतंत्र और गहरी अभिरुचि रखते हैं। अब जब शिक्षा का उद्देश्य रोज़गार पाना बन ही गया है तो पुराने ढर्रे पर चलते जाकर लोगों का धन, समय और शक्ति नष्ट करने, उन्हें मात्र साक्षर बनाकर छोड़ देने का कोई अर्थ नहीं है। ऐसा करना अन्याय और अमानवीयता है। यह राष्ट्रीय हित में भी नहीं है। इसको रोकने या दूर करने के लिए यदि हमें वर्तमान शिक्षा-जगत का पूरा ढांचा भी क्यों न बदलना पड़े, बदल डालने से रुकना या घबराना नहीं चाहिए। यही समय की पुकार और युग की मांग है।

13. मधुर वचन हैं औषधि

बात करते समय किसी के मन को मोह लेने की मोहिनी शक्ति का नाम मधुर भाषण है। किसी की बड़ाई करते हुए लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति बात करता है तो मानों मिसरी घोल देता है। दूसरा व्यक्ति एक अन्य व्यक्ति की प्रशंसा करता हुआ कहता है कि उसकी वाणी से तो मानों फूल झड़ते हैं। यह मिसरी घोलना और फूल झड़ना मीठी वाणी के ही संकेत हैं। व्यक्ति द्वारा बोले गए मधुर-कोमल शब्द जहाँ मित्रता का विस्तार करते हैं, वहीं कटु-कठोर शब्द शत्रु-भाव बढ़ाते हैं। मनुष्य-मनुष्य का संबंध वस्तुओं के आदान-प्रदान पर उतना निर्भर नहीं करता, जितना कि शब्दों के आदान-प्रदान पर करता है। व्यवहार में देखने में आता है कि अपने घर आए व्यक्ति के लिए यदि आप स्वागत के दो शब्द कह देते हैं, तो आपके द्वारा की गई साधारण अतिथि-सेवा भी उसे अच्छी ही लगेगी, किंतु यदि उसके खान-पान तथा रहन-सहन की समुचित व्यवस्था करने पर भी आप कुछ कड़वी-कठोर बात कर जाते हैं तो सारा करा-धरा व्यर्थ हो जाता है और सत्कार के स्थान पर आप उसके द्वेष के पात्र बन जाते हैं। मनुष्य के कटु-कठोर वचन कहीं-कहीं अत्यधिक अनिष्टकारी सिद्ध होते हैं। द्रौपदी के कड़वे वचन दुर्योधन के

अंत:करण में शूल-से जा गड़े और परिणाम महाभारत के रूप में सामने आया। सयाने लोग कहते हैं कि 'तलवार का घाव समय पर भर जाता है, पर वाणी का घाव कभी नहीं भरता'। इसलिए कबीरदास ने कहा कि–

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहुँशीतल होय।

14. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' यह पूर्णत: सत्य है कि लगातार अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी बुद्धिमान बन सकता है। अभ्यास के द्वारा ही मनुष्य अपनी क्षमताओं का विकास करके निपुण बन सकता है। अभ्यास के अभाव में तो वह अपने अर्जित ज्ञान एवं कौशल को भी भूल जाता है। संसार में सभी प्राणी जन्म से बुद्धिमान नहीं होते। कुछ में बुद्धि तो होती है, पर वह सुषुप्तावस्था में रहती है। अभ्यास करते रहने से वह बुद्धि सक्रिय हो जाती है। कलाएँ भी अभ्यास से ही निखरती हैं। वरदराज निपट मूर्ख था। वह कुएँ की जगत पर रस्सी से पड़े निशानों से प्रेरणा लेकर निरंतर अभ्यास में जुट गया और अभ्यास के बलबूते पर ही संस्कृत का महान विद्वान बन गया। कालिदास भी प्रारंभ में जड़बुद्धि थे, पर विदुषी पत्नी की फटकार सुनकर अभ्यास के बलबूते पर संस्कृत के महान कवि और नाटककार बन गए। वही विद्यार्थी सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता है, जो निरंतर पढ़ाई का अभ्यास करता रहता है। अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी चतुर बन जाता है। नृत्य-संगीत के क्षेत्र में तो अभ्यास का और अधिक महत्व है। अभ्यास ही कलाकार को अपने क्षेत्र में पारंगत बनाता है। अत: हम कह सकते हैं कि अभ्यास की बहुत महिमा है।

15. छात्र स्वयं करें।

16. वह अविस्मरणीय यात्रा

सर्दियों का मौसम था और हम ट्रेन से मंसूरी जा रहे थे। शायद हमें बर्फ गिरती हुई देखने को मिल जाए–यह उत्सुकता हमारे मन में थी। हम देर रात तक तरह-तरह के खेल खेलते रहे और फिर सो गए। जैसे ही सोए गाड़ी एक झटके से रुक गई। जो नीचे की बर्थ पर थे, वे लुढ़ककर नीचे गिर गए। ऊपर की बर्थ वालों को भी हलकी चोट आई। पता लगा कि किसी ने अचानक चेन खींच दी थी। कोई चोर था जो एक बैग चुराकर भाग रहा था। लगभग 15-20 मिनट रुककर गाड़ी फिर आगे बढ़ी। अब तो हमारी नींद गायब हो चुकी थी। सुबह हम देहरादून स्टेशन पर उतरे और वहाँ से बस से मंसूरी के लिए रवाना हुए। पता लगा कि रात से बर्फ गिर रही है और रास्ता कभी भी बंद हो सकता है। हम आधे रास्ते पहुँच गए थे। बस रुक गई, पता लगा कि एक पत्थर लुढ़ककर सड़क पर आ गया है, साथ ही बर्फबारी होने के कारण रास्ता बिल्कुल बंद हो गया है। कोई उपाय न था। एक पूरा दिन हमने यात्री बस में बिताया। बर्फ गिरती देखी तो सही मगर हम उसका आनंद न उठा पाए। जब तक मंसूरी पहुँचे इतना परेशान हो गए थे कि सोचा अब आनंद उठाने के चक्कर में फिर कभी इतनी परेशानी मोल न लेंगे। दो दिन वहाँ बिछी हुई बर्फ पर हम घूमते रहे और कभी न भुला सकने वाली यात्रा की याद को अपने मन में लेकर घर वापस लौट आए।

17. दूरदर्शन

विज्ञान ने लालपरी को एक जादुई डिब्बे में कैद कर लिया है, जो बटन दबाते ही हमारी रुचि के कार्यक्रम लेकर सामने आ जाती है। दूरदर्शन का शाब्दिक अर्थ है–दूर की वस्तु को देखना। टेलीविजन रेडियो का ही विकसित रूप है। टेलीविजन का आविष्कार सन् 1926 में स्काटलैंड के वैज्ञानिक जे॰एल॰ बेयर्ड ने किया था। भारत में अक्टूबर 1959 में दूरदर्शन प्रारंभ हुआ। सबसे पहले केवल श्वेत श्याम (ब्लैक एंड व्हाइट) टी॰वी॰ ही हुआ करते थे। दुनिया भर के लोग सायंकाल से देर रात तक टी॰वी॰ के कार्यक्रमों का आनंद उठाते हैं। आज रंगीन व केबल टी॰वी॰ का युग है। दर्शकों के लिए सैकड़ों चैनल उपलब्ध हैं। ताजातरीन समाचार हों, गीत संगीत हो, भजन कीर्तन हो या योग और ज्योतिष संबंधी कार्यक्रम हर भाषा में मनोरंजक और शिक्षाप्रद कार्यक्रमों की होड़ लगी हुई है। घर बैठे सभी कुछ देखने की सुविधा! रिमोट द्वारा तो टी॰वी॰ को दूर से बैठे-बैठे ही संचालित कर सकते हैं। दूरदर्शन हर उम्र, हर वर्ग, हर स्तर की रुचि के कार्यक्रम लेकर चौबीस घंटे हमारी सेवा में उपस्थित है। छात्र, शिक्षक, डॉक्टर, वैज्ञानिक, कृषक, मजदूर, उद्योगपति, व्यापारी और गृहिणी सभी इससे लाभ उठा सकते हैं। किंतु विज्ञान के इस अनमोल उपहार ने हमारा नुकसान भी किया है। बच्चों और बड़ों की गतिविधियाँ कमरे तक सीमित हो गयी हैं। सभी हर समय टी॰वी॰ से चिपके रहना चाहते हैं जिससे न केवल समय की हानि होती है, बल्कि स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है। टी॰वी॰ के सभी प्रोग्राम बच्चों के देखने के योग्य नहीं होते, बच्चों के कोमल मन और मस्तिष्क पर इनका दुष्प्रभाव पड़ता है। दूरदर्शन का दर्शन हमें दूर से बैठकर करना चाहिए, क्योंकि पास टी॰वी॰ देखना आँखों को नुकसान पहुँचाता है।

18. राष्ट्रीय ध्वज

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना एक ध्वज होता है। यह एक स्वतंत्र देश होने का संकेत है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की अभिकल्पना पिंगली वैंकेयानंद ने की थी और इसे इसके वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई, 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था। यह 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेज़ों से भारत की स्वतंत्रता के कुछ ही दिन पूर्व की गई थी। इसे 15 अगस्त, 1947 और 26 जनवरी, 1950 के बीच भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया और इसके पश्चात भारतीय गणतंत्र ने इसे अपनाया। भारत में 'तिरंगे' का अर्थ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंग की क्षैतिज पट्टियाँ हैं, सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफ़ेद और नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी और ये तीनों समानुपात में हैं। हमारे राष्ट्रीय ध्वज के तीनों रंग प्रतीकात्मक हैं। केसरिया रंग त्याग और वीरता का प्रतीक है। यह हमारे त्याग और शौर्य की गाथा गाता है। झंडे के मध्य सफ़ेद रंग शांति का प्रतीक है। हमारा देश संसार में शांति व भाईचारे का संदेश फैलाना चाहता है। झंडे का हरा रंग भारत की हरियाली और खुशहाली का प्रतीक है। ध्वज की चौड़ाई का अनुपात इसकी लंबाई के साथ 2 और 3 का है। सफ़ेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है। यह चक्र अशोक की राजधानी के सारनाथ के शेर के स्तंभ पर बना हुआ है। इसका व्यास लगभग सफ़ेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर होता है और इसमें 24 तीलियाँ है। यह चक्र भारत की प्रगति तथा लोकतंत्र का प्रतीक है। हमारा राष्ट्रीय झंडा देश की विचारधारा के अनुसार ही बनाया गया है। सभी राष्ट्रीय पर्वों पर देश के प्रत्येक भाग में झंडारोहण किया जाता है। देश में जब कभी राष्ट्रीय शोक होता है तब झंडे झुका दिए जाते हैं। हम सब राष्ट्रीय झंडे का सम्मान करते हैं।

19. भारत की शान–दिल्ली मेट्रो

दिल्ली मेट्रो यह शहर के चारों ओर सफर करने का बहुत अच्छा तरीका है। दिल्ली बहुत भीड़ वाली जगह है। जिसके कारण दिल्ली के सड़कों पर बहुत भीड़ लगी रहती थी। दिल्ली मेट्रो यह प्रदूषण द्वारा जानलेवा दुर्घटना और यातायात की स्थिति को कम करने के लिए सरकार ने भारत की राजधानी दिल्ली में मेट्रो रेल चलाने का कार्य शुरू कर दिया। दिल्ली मेट्रो यहाँ के लोगों के लिए किसी सपने से कम नहीं थी। हमारे देश में दिल्ली मेट्रो की शुरुआत देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्व॰ श्री अटल बिहारी वाजपेयी के द्वारा 24 दिसंबर, 2002 को हुई थी। दिल्ली मेट्रो का पहला रूट उत्तरी दिल्ली के शाहदरा से तीसहजारी तक का था। पूरे संसारभर के देश; जैसे–जापान, जर्मनी, फ्रांस, सिंगापुर, अमेरिका इन देशों में मेट्रो की शुरुआत पहले से हो चुकी थी। इस दिल्ली मेट्रो के अंदर जाने और बाहर आने के लिए माइक्रोप्रोसेसर के नियंत्रित दरवाज़े लगे हुए हैं। इसके कोच अत्याधुनिक तकनीक और वातानुकूलित हैं। टिकट वितरण प्रणाली भी स्वचालित है। इस दिल्ली मेट्रो का सफ़र करने वाले यात्रियों के सुविधा के लिए मेट्रो स्टेशन के परिसर में एस्केलेटर संस्थापित किए गए हैं। मेट्रो का प्रयोग विकलांग लोग भी बहुत आसानी से कर सकते हैं। मेट्रो रेल ने लोगों की ज़िंदगी को गति प्रदान की है और दिल्ली में ट्रैफिक जाम होने से बचाया है। दिल्ली मेट्रो से हर दिन लाखों लोग सफ़र करते हैं। इसके शुरू होने पर लाखों लोगों की परेशानी समाप्त हो गई हैं। जिन लोगों को अपना सफ़र करने के लिए 3 घंटों का समय लगता था। लेकिन आज मेट्रो के आ जाने से यह सफर 40 से 50 मिनटों में तय होने लगा है। यह मेट्रो हर एक स्टेशन पर 20 सेकंड्स के लिए रुकती है। कोई भी व्यक्ति दिल्ली से दूसरे स्थान पर बहुत कम कीमत और कम समय में सफ़र कर सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य यातायात को नियंत्रित करना था। दिल्ली सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला शहर है। इस शहर में मानव जीवन बहुत व्यस्त है। साथ ही लोगों को प्रदूषण की समस्या का सामना करना पड़ता है। हर दिन सड़कों पर वाहनों की और बस में भीड़ होती है। जिसकी वजह से लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। लेकिन आज मेट्रो रेल आने के कारण लोगों का जीवन में थोड़ा सुकून है। दिल्ली मेट्रो यहाँ के लोगों के लिए वरदान साबित हुई है। इस मेट्रो रेल को राजधानी की शान कहा जाता है। इसे साफ़-सुथरा रखना यह सरकार के साथ-साथ हम सभी का कर्तव्य है।

20. आँखों देखी दुर्घटना

वैसे तो दुनिया में हर एक पल में बहुत सारी दुर्घटनाएँ होती हैं पर एक ऐसी घटना है जो मैंने खुद अपनी आँखों से देखी है और उस दुर्घटना ने मेरी ज़िंदगी में बहुत असर डाला है। एक बार मैं अपने परिवार के साथ रात को किसी विवाह से घर वापस आ रहा था और गाड़ी मैं चला रहा था। हम बहुत साधारण रफ़्तार से जा रहे थे की एक लाल रंग की गाड़ी बहुत तेज़ी से हमको पीछे छोड़ आगे निकल गई और देखते-ही-देखते आँखों से ओझल हो गई क्योंकि उसकी रफ़्तार बहुत तेज़ थी। मेरे पिता जी कहने लग गए की ऐसे लोग खुद तो दुर्घटना का शिकार होते ही हैं और साथ में दूसरों को भी नुकसान पहुँचाते हैं। हम

बातें करते थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि देखा वही गाड़ी दूसरी गाड़ी से टकरा गई। ये टक्कर इतनी ज़ोरदार थी कि लग रहा था जैसे कोई बम फटा हो। थोड़े समय के लिए तो समझ में ही नहीं आया कि हुआ क्या है। आस-पास बहुत धुआँ भी हो गया था। हमने गाड़ी रोक ली और मदद के लिए गाड़ी से उतरे, हमें देख और लोग भी वहाँ आ गए। वह लाल रंग की गाड़ी एक 21 साल का लड़का चला रहा था जो की मौके पर ही अपने प्राण गवाँ चुका था। वह जिस गाड़ी से टकराया था उस गाड़ी में सवार परिवार को भी गंभीर चोटें लगी थीं जिन्हें एंबुलेंस से तुरंत नजदीक के अस्पताल पहुँचाया गया। उस दिन के बाद मैं बहुत सावधानी और धीरे गाड़ी चलाता हूँ और दूसरों को भी यही सलाह देता हूँ।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

1. ज़िंदगी ज़िंदादिली का नाम है

जीवन का अर्थ जोश, उत्साह, हिम्मत और ज़िंदादिली। कहते हैं ज़िंदगी ज़िंदादिली का नाम है। मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं। हलचल, हिम्मत, साहस जीवन की निशानी है। जो लोग हर क्षण उत्साह की तरंग में रहते हैं, उनकी जीवन जीने की शैली मनोरम होती है। जो जीवन के हर खतरे को चुनौती समझकर झेलते हैं, उनका जीवन उत्सव-जैसा बन जाता है। उन्हें हर क्षण नया काम मिला रहता है। वे अपने मन में स्फूर्ति और नवीनता का अनुभव करते हैं। वे कभी मन में निराशा और ग्लानि अनुभव नहीं करते। बल्कि उन्हें खतरों से जूझते हुए भी एक हर्ष और संतोष प्राप्त होता है। सुभाषचंद्र बोस ने ज़िंदादिली से जीवन जिया, इसलिए उनके जीवन का क्षण-क्षण प्रेरणामय बन गया। इसके विपरीत कायर, आलसी और निकम्मे लोग हर रोज कई बार मरते हैं। उन्हें पग-पग पर अपमान सहना पड़ता है। यदि मनुष्य यह सोच ले कि उसे एक-न-एक दिन मरना ही है तो वह खुलकर जिएगा, हिम्मत से जिएगा। एक कवि ने कहा भी है, "एक दिन भी जी, मगर तू ताज बनकर जी।"

2. विज्ञान के बढ़ते चरण

वर्तमान समय में समस्त विश्व एक विशाल नगर के रूप में परिवर्तित हो चुका है। ऐसा विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति के कारण ही संभव हुआ है। विज्ञान की उन्नति से सामान्य व्यक्ति का जीवन स्तर भी ऊँचा हुआ है। व्यक्ति दिन-प्रतिदिन ज्ञान के नए शिखरों को स्पर्श कर रहा है। विज्ञान के कारण वर्तमान युग का मानव जीवन के विविध क्षेत्रों में अद्‌भुत उन्नति करने में समर्थ रहा है। बढ़ती वैज्ञानिक प्रगति मानव के लिए चिंता का विषय भी बन चुकी है। हथियारों की अंधी दौड़ ने मानव जाति को एक विशाल ज्वालामुखी के मुख पर खड़ा कर दिया है। भयानक मारक अस्त्रों के बल पर पूँजीपति राष्ट्र सामान्य राष्ट्रों को अपना दास बनाने में लगे हैं। आज के समय की आवश्यकता है कि विज्ञान और धर्म का समन्वय हो तथा मानव जाति भय और आशंका के गर्त से बाहर निकले।

3. मेरा प्रिय विषय

मैं एक पब्लिक स्कूल में कक्षा दसवीं का छात्र हूँ। मैं कई विषय याद करता हूँ। परंतु मुझे अंग्रेज़ी विषय अत्यधिक पसंद है। हिंदी मेरी मातृभाषा है मुझे इस पर गर्व है। ये मुझे सरलता से याद हो जाती है। हम घर में हिंदी बोलते हैं। हिंदी हमारे दैनिक जीवन में प्रयोग होती है। परंतु अंग्रेज़ी का मेरे लिए विशेष आकर्षण है। मैं इसे बड़ी रुचि के साथ याद करता हूँ। अंग्रेज़ी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। यह हमारे देश को अन्य देशों से जोड़ती है। शिक्षा के साधन के रूप में यह एक महत्वपूर्ण भाषा है। अंग्रेज़ी की योग्यता के बिना कोई उन्नति संभव नहीं, क्योंकि यह वैज्ञानिक, तकनीकी व व्यापारिक भाषा है। अंग्रेज़ी का साहित्य बहुत ही विस्तृत है। भारत में कई अंग्रेज़ी के लेखक उत्पन्न हुए हैं। सभी शिक्षित भारतीय अंग्रेज़ी बोलते व समझते हैं। अंग्रेज़ इसे हमारे देश में लाए थे। यह भारत में लगभग दो सौ वर्षों से है। कई लोग कहते हैं कि अंग्रेज़ी एक कठिन भाषा है। वे कहते हैं कि इसकी वर्तनी बहुत कठिन है। उच्चारण भी अलग होता है तथा लिखने में व बोलने में अंतर होता है। परंतु मेरे विचार से यह सही नहीं है। हर भाषा का अपना व्याकरण व वाक्य-प्रयोग होता है। मेरे विचार से अंग्रेज़ी बहुत ही सुंदर व उपयोगी भाषा है। इसकी अपनी खूबसूरती, समृद्‌धि व आकर्षण है। इसमें विभिन्नता व समृद्‌धि है। हमारा स्कूल अंग्रेज़ी माध्यम का है। बड़े-बड़े प्रशिक्षण केंद्रों में अंग्रेज़ी माध्यम ही चलता है। मैं कंप्यूटर वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ, बिना अंग्रेज़ी के ज्ञान के मैं अपना सपना साकार नहीं कर सकता। मैं इस विषय में अधिक रुचि लेता हूँ और हमेशा अच्छे अंक लाता हूँ। मैं अंग्रेज़ी भी अच्छी बोलता हूँ। मुझे इस पर गर्व है।

4. गणतंत्र दिवस

प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाने वाला गणतंत्र दिवस, भारत का राष्ट्रीय पर्व है। जिसे प्रत्येक भारतवासी पूरे उत्साह, जोश और सम्मान के साथ मनाता है। राष्ट्रीय पर्व होने के नाते इसे हर धर्म, संप्रदाय और जाति के लोग मनाते हैं। 26 जनवरी, 1950 को हमारे देश को पूर्ण स्वायत्त गणराज्य घोषित किया गया था और इसी दिन हमारा संविधान लागू हुआ था। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को भारत का गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। चूंकि यह दिन किसी विशेष धर्म, जाति या संप्रदाय से न जुड़कर राष्ट्रीयता से जुड़ा है, इसलिए देश का हर नागरिक इसे राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाता है। खासतौर से सरकारी संस्थानों एवं शिक्षण संस्थानों में इस दिन ध्वजारोहण, झंडा वंदन करने के पश्चात राष्ट्रगान जन-गन-मन का गायन होता है और देशभक्ति से जुड़े विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। देशभक्ति गीत, भाषण, चित्रकला एवं अन्य प्रतियोगिताओं के साथ ही देश के वीर सपूतों को याद भी किया जाता है और वंदे मातरम्, जय हिंदी, भारत माता की जय के उद्घोष के साथ पूरा वातावरण देशभक्ति से ओतप्रोत हो जाता है। भारत की राजधानी दिल्ली में गणतंत्र दिवस पर विशेष आयोजन होते हैं। देश के प्रधानमंत्री द्वारा इंडिया गेट पर शहीद ज्योति का अभिनंदन करने के साथ ही उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए जाते हैं। इस दिन विशेष रूप से दिल्ली के विजय चौक से लाल किले तक होने वाली परेड आकर्षण का प्रमुख केंद्र होती है। जिसमें देश और विदेश के गणमान्य जनों को आमंत्रित किया जाता है। इस परेड में तीनों सेना के प्रमुख राष्ट्रपति को सलामी दी जाती है एवं सेना द्वारा प्रयोग किए जाने वाले हथियार, प्रक्षेपास्त्र एवं शक्तिशाली टैंकों का प्रदर्शन किया जाता है एवं परेड के माध्यम से सैनिकों की शक्ति और पराक्रम को बताया जाता है। गाँव से लेकर शहरों तक, राष्ट्रभक्ति के गीतों की गूँज सुनाई देती है और प्रत्येक भारतवासी एक बार फिर अथाह देशभक्ति से भर उठता है। इस दिन आयोजित कार्यक्रमों में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान एवं पुरस्कार वितरण भी किया जाता है और मिठाई वितरण भी विशेष रूप से होता है। बच्चों में इस दिन को लेकर बेहद उत्साह होता है।

5. मेरी दिनचर्या

मैं विद्यार्थी हूँ इसलिए मेरी दिनचर्या बड़ी साधारण और बंधी-बंधाई है। एक बार मेरे प्रिंसिपल ने एक भाषण के दौरान प्रात:काल जल्दी उठने के लाभ बताए थे और कहा था कि ऐसा करने पर स्वास्थ्य, धन और बुद्धिमता जैसे जीवन के तीन मुख्य वरदान स्वत: प्राप्त हो जाते हैं। तब से मैं हर दिन बड़े सवेरे बिस्तर से उठने लगा हूँ। उषाकाल में उठकर मैं शौच आदि से निपटकर ठंडे पानी से स्नान करता हूँ और स्वच्छ कपड़े पहनकर निकट के मंदिर में जाता हूँ। मेरी माँ की इच्छा है कि मैं ईश्वर की प्रार्थना के बाद ही दिन का काम प्रारंभ करूँ। नाश्ते में एक कटोरी दलिया या एक प्लेट पोहा और एक गिलास दूध पीता हूँ। तब तक प्रात: के सात बज जाते हैं। मैं अब पढ़ने बैठ जाता हूँ और दस बजे तक पढ़ाई करता हूँ। इन तीन घंटों के दौरान मैं विभिन्न विषयों पर दिया गया होमवर्क पूरा कर लेता हूँ तथा पिछले दिन पढ़ाए गए पाठ को दोहरा लेता हूँ और उस दिन की पढ़ाई भी पहले से पढ़कर तैयार कर लेता हूँ। जो विद्यार्थी अपने शिक्षा काल में नियमित जीवन की आदत डाल लेते हैं, वे जीवनभर सुखी रहते हैं। "जल्दी सोना और जल्दी उठना व्यक्ति को स्वस्थ, समृद्ध और बुद्धिमान बनाता है।" हम सभी को इसका पालन करना चाहिए।

6. हमारा देश

हमारा भारत देश विश्व की प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृति का वाहक महान देश है। इसे विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश भी कहा जाता है। यहाँ का भौगोलिक सौंदर्य अनुपम है। भारत को तीन ओर से समुद्र ने घेरा हुआ है। यहाँ के पर्वत और उनसे निकलने वाले झरने तथा नदियाँ देश की शोभा में चार चाँद लगाते हैं। यहाँ की हिमाच्छादित पर्वत चोटियों पर सूर्योदय एवं सूर्यास्त के दृश्य अत्यंत मनोहरी प्रतीत होते हैं। भारत में कहीं पर्वत हैं तो कहीं मरुभूमि, कहीं मैदान हैं तो कहीं पठार। यहाँ के उपजाऊ खेतों में हरी-भरी फ़सलें लहलहाती हैं। यहाँ के समुद्रों की छटा भी देखते ही बनती है। कश्मीर को तो पृथ्वी का स्वर्ग कहते हैं। यहाँ की संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। जहाँ विश्व की अनेक संस्कृतियाँ अंधकार के गर्त में विलीन हो गईं, वहीं भारत की संस्कृति विश्व में अपनी श्रेष्ठता की पताका को अनवरत फहरा रही है। हमारी संस्कृति में सत्य, अहिंसा, परोपकर, सदाशयता, उच्च विचार, करुणा एवं दया के भावों को अपनाया गया है। भारत एक शांतिप्रिय राष्ट्र है, जो विश्व में शांति बनाए रखने का प्रबल समर्थक है। इसका पंचशील और सहअस्तित्व में पूरा विश्वास है। भारत किसी पर आक्रमण करने में विश्वास नहीं रखता। यह तो परमाणु-शक्ति का उपयोग भी शांतिपूर्ण कार्यों के लिए करने हेतु कृतसंकल्प है। हमारा प्यारा राष्ट्र चहुँमुखी विकास कर रहा है। विश्व में हमारी प्रतिष्ठा है। हमारा राष्ट्र स्वावलंबन की दिशा में अग्रसर है। राष्ट्र वैश्वीकरण की नीति पर चलकर भरपूर आर्थिक विकास कर रहा है।

7. आकाश की ऊँचाइयों को छूता मानव

आकाश की ऊँचाई को आज मानव छूता जा रहा है। इसका तात्पर्य यह कि मानव ने अपनी बुद्धि के बल पर असंभव कार्यों को भी संभव कर दिखाया है। आज मानव ने अपनी बुद्धि प्रयोग द्वारा विज्ञान में ऐसे अनोखे-अनोखे आविष्कार किए हैं, जिससे उसके लिए कठिन-से-कठिन कार्य भी आसान हो गए हैं। जहाँ कभी पहले मानव का पहुँचना संभव नहीं था वहाँ भी आज मानव पहुँचने लगा है। संसार में चारों तरफ़ आसमान को छूती ऊँची-ऊँची इमारतें मानव की महत्वाकांक्षा और प्रगति का सूचक है। मानव आज अंतरिक्ष की सीमाओं को लांघकर सुदूर ग्रहों पर जाने की तैयारी कर रहा है। वह चाँद, मंगल जैसे ग्रहों पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है तो अन्य ग्रहों पर भी अपने कदम रखने के लिए आतुर है। ब्रह्मांड के अनेक रहस्य आज मानव के लिए अनसुलझे नहीं रहे। मानव ने विज्ञान की सहायता से ऐसे अनोखे-अनोखे आविष्कार किए हैं जिससे कई कठिन कार्य बेहद आसान हो गए हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में, तकनीक के क्षेत्र में और जीवन के अन्य अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मानव विकास की नई-नई ऊँचाइयों को छू रहा है, इसलिए कह सकते हैं कि आकाश की ऊँचाई को आज मानव निरंतर छूता जा रहा है और कोई भी कार्य उसकी पहुँच से बाहर नहीं है।

8. मेरे नगर में भी हुआ विकास

दिल्ली भारत की राजधानी है। इसे लघु भारत की संज्ञा दी जा सकती है। भारत के सभी प्रांतों के लोग यहाँ दृष्टिगत होते हैं। दिल्ली महानगर की जनसंख्या लगभग एक करोड़ नब्बे लाख से भी अधिक है। पिछले कुछ समय में दिल्ली की तस्वीर बहुत बदल गई है। यहाँ बुनियादी सुविधाओं का पर्याप्त विस्तार हुआ है। बिजली-पानी तथा यातायात के साधनों की दृष्टि से यह महानगर देश के अन्य नगरों की अपेक्षा अधिक सुविधा-संपन्न है। फिर पिछले कुछ समय में दिल्ली में बहुत से फ्लाई ओवर बन गए हैं जिससे यातायात की सुविधा में वृद्धि हुई है। मैट्रो रेल के कारण भी दिल्लीवासियों के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना-जाना सुगम हो गया है। दिल्ली में अनेक मॉल्स खुल गए हैं, जिससे दिल्ली की तस्वीर बहुत बदल गई है। पिछले कुछ वर्षों से शहर के सौंदर्यीकरण की ओर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

9. मेरा देश महान

संसार के अन्य देशों की अपेक्षा भारतवर्ष की पावन धरती का सौंदर्य अत्यंत अद्भुत है। हिमालय भारत के माथे का दिव्य मुकुट है तथा सागर भारत माता के चरणों को स्पर्श कर धन्य होता है। यहाँ की सभ्यता और संस्कृति संपूर्ण विश्व में अद्वितीय है। हमारा देश भारत प्राचीनकाल से ही ज्ञान-विज्ञान और शिल्प के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। विश्व में अनेक देशों की सभ्यताएँ रसातल में लुप्त हो गईं परंतु हमारी सभ्यता एवं संस्कृति आज भी विश्व के समक्ष गौरव से सिर ऊँचा किए हुए है। यहाँ विभिन्न प्रांतों के लोगों के अपने-अपने रीति-रिवाज हैं तथा विभिन्न प्रांतों एवं धर्मों के लोग विभिन्न पर्व मनाते हैं परंतु इस विभिन्नता में भी एक विशिष्ट एकता के दर्शन होते हैं। भारत के निवासियों में देश के गौरव की रक्षा करने के लिए अपने प्राण न्योछावर करने की भावना रहती है। वस्तुत: भावना की दृष्टि से देश की विविधता में अनेक रूप से समन्वय और एकता दृष्टिगत होती है। पिछले कुछ वर्षों में भारत तीव्र गति से विकास कर रहा है तथा विश्व के अग्रणी देशों में अपना स्थान बनाने का प्रयास कर रहा है। 'अनेकता में एकता' हमारे देश को और महान बनाती है।

10. आत्मनिर्भरता

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में स्वावलंबन परम आवश्यक है। स्वावलंबन का अर्थ है—स्वयं पर निर्भर होना। जो व्यक्ति अपना सहारा स्वयं बनता है और कार्यों की पूर्ति हेतु स्वयं पर ही निर्भर रहता है, वह सदैव उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता जाता है। ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। स्वावलंबी व्यक्ति स्वतंत्र होकर अपनी इच्छानुसार अपने कार्यों को गति प्रदान करता है और लक्ष्य-प्राप्ति हेतु जी-तोड़ मेहनत करता है। किसी भी बाधा या रुकावट की परवाह नहीं करता। स्वावलंबी व्यक्ति विनम्र, त्यागी एवं मेहनती होता है। अपने स्वाभिमान की रक्षा हेतु बड़े-से-बड़े पद एवं वैभव को भी तिनके के समान ठुकरा देता है। स्वावलंबी व्यक्ति आत्मविश्वास से भरपूर होता है और अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होता है। वह अकेला ही अपना कार्य पूर्ण करने के लिए आगे बढ़ता है और उसे अपना काम करने में अद्भुत आनंद प्राप्त होता है। स्वावलंबी व्यक्ति हर क्षेत्र में यश, प्रशंसा एवं गौरव प्राप्त करते हैं। उन्हें शारीरिक व मानसिक संतुष्टि प्राप्त होती है। अनेक महापुरुष ऐसे हैं, जो स्वावलंबन के कारण महान बने हैं। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, कोलंबस, गांधी जी, सुभाषचंद्र बोस, गुरुनानक देव, गुरु गोविंद सिंह, नेपोलियन, अब्राहम लिंकन आदि ने स्वावलंबन के बल पर ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सफलता अर्जित की।

स्वावलंबन की शिक्षा बचपन से ही संस्कारों में डालनी चाहिए ताकि बच्चे के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी होता रहे। प्रकृति से हमें स्वावलंबी होने की शिक्षा प्राप्त होती है। पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि स्वयं ही चलना-फिरना, खाना-पीना, रास्ता खोजना सीख लेते हैं। इस प्रकार हमें भी स्वावलंबी होकर समाज और राष्ट्र की उन्नति में साथ देना चाहिए। स्वावलंबी व्यक्ति ही नव-निर्माण में सहयोग दे सकते हैं।

11. खान-पान की बदलती तस्वीर

बहुत समय तक भारत में शाकाहारी लोगों की संख्या अधिक थी। शराब का चलन हिंदू, सिख और मुस्लिम सभी धर्मों में निषिद्ध ही था। भोजन में हमेशा दाल-चावल, रोटी-सब्जी, दही या छाछ और सलाद एक आम व्यक्ति को भी सहज सुलभ था। सब्जियाँ सस्ती थीं और मौसमी फलों के भाव आमजन की पहुँच में थे। नाश्ते में नमक अजवाईन के परांठे पर मक्खन की डली रखकर खाने वाले मेहनती भारतीय नागरिक या ग्रामीण उच्च रक्तचाप के शिकार न थे। मिठाइयाँ भी तब बस त्योहारों पर बनतीं वह भी गृहणियों के नपेतुले हाथों से। तब ब्रेड बहुत कम चलन में थी। बच्चे नाश्ते में केवल दो बिस्किट खाकर ही नहीं रह जाने वाले थे। सुबह-शाम बच्चे ताजा दूध पीते थे। टिफिन में रोटी-सब्जी लेकर जाते थे। धीरे-धीरे जीवन-शैली में बदलाव आया। महिलाओं ने रसोई के साथ-साथ आर्थिक मोर्चा संभाला, संयुक्त की जगह एकांगी परिवारों में बढ़ोत्तरी हुई। लंबी भोजन विधियों और सुबह-शाम रसोई में बिताने से गृहणी उकताने लगीं तो, ब्रेड घरों में आई। रिफाईंड, मैदा और बेकिंग पाउडर का उपयोग बढ़ा, केक, मैगी, आइसक्रीम, बिस्किट, जैम, कस्टर्ड आदि के जरिए कई खाद्य रंगों, इमल्सीफायर, प्रिजर्वेटिव्स आदि के रूप में कई रसायन हम उदरस्थ करने लगे। हमारे भोजन में रेशे और पोषक तत्वों की भारी कमी आने लगी। बच्चे, बड़े अन्य आकर्षणों के चलते दूध पीने से कतराने लगे। पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण से धूम्रपान, शराब और मांसाहार का चलन बढ़ गया। परिणाम स्वरूप लोग उच्चरक्तचाप, हृदय रोग आदि बिमारियों से ग्रसित होने लगे। अधिकांश रोग का परहेज और इलाज दोनों हमारी जीवन शैली से जुड़ा हुआ है। मसलन हम कितना शारीरिक श्रम करते हैं और खाते क्या हैं? हमें ब्रेड और बेकिंग सोडा युक्त बेकरी आइटमों का कम इस्तेमाल करना चाहिए। भोजन में रेशों से भरपूर अनाजों, सब्जियों का प्रयोग बढ़ाना चाहिए।

12. मीडिया और उसका प्रभाव

वर्तमान युग में मीडिया की भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। मीडिया के दो रूप हैं—प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। प्रिंट मीडिया में समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ आती हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टेलीविज़न, इंटरनेट, रेडियो आदि आते हैं। आजकल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जनसंचार का सशक्त माध्यम बन गया है। इससे समाचारों एवं रिपोर्टों का आदान-प्रदान अत्यंत तीव्र गति से होता है। इसमें खबरों तथा कार्यक्रमों को सुनने के साथ-साथ सचित्र भी देखा जा सकता है। इंटरनेट पत्रकारिता का प्रसार निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसका कहीं भी, कभी भी उपयोग किया जा सकता है। इंटरनेट पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता भी कह सकते हैं। यह सूचनाओं के आदान-प्रदान का बेहतर माध्यम है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की जहाँ अनेक विशेषताएँ हैं, वहीं कुछ कमियाँ भी हैं। इसमें लाखों अश्लील पन्नों की सामग्री भर दी गई है। इसका बच्चों के मन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इंटरनेट के दुरुपयोग की अनेक घटनाएँ सामने आ रही हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तात्कालिक घटनाओं को ब्रेकिंग न्यूज़ बनाकर तुरंत हम तक पहुँचाती है जबकि उस घटना का समाचार प्रिंट मीडिया (अखबार) के द्वारा अगले दिन ही हमारे पास पहुँच पाता है। इंटरनेट जनसंचार का सबसे नया लेकिन तेज़ी से लोकप्रिय हो रहा माध्यम है। यह एक ऐसा मीडिया है जिसमें रेडियो, टेलीविज़न, किताबें, यहाँ तक कि पुस्तकालय के सारे गुण समाए हुए हैं। यह एक 'अंतरक्रियात्मक' माध्यम है यानी आप इसमें मूक दर्शक मात्र नहीं हैं। आप चैट कर सकते हैं, अपना ब्लॉग बना सकते हैं, किसी बहस के सूत्रधार बन सकते हैं। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि हमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रयोग तो अवश्य करना चाहिए, पर इसके प्रयोग में सावधानी बरतने की भी आवश्यकता है।

13. लड़कियों की शिक्षा

इस बात में कोई दो राय नहीं है कि सुशील बेटियाँ दो कुलों की आन व शान होती हैं। दो परिवारों का नाम उज्ज्वल करती हैं। प्राचीन काल से ही इस महत्व को स्वीकार किया जाता रहा है। सुशिक्षित एवं सुघड़ कन्या माता-पिता के साथ-साथ ससुराल पक्ष में भी अपना अस्तित्व एवं वर्चस्व बनाती है। परिवार को एक बंधन में बाँधकर रखती है। परंतु लड़कियों को शिक्षित होने से वंचित रखना और पैदा होने से पहले ही मार देना आदि समस्याएँ भारत देश में संकट की तरह हैं। लड़के और लड़की के लिंग अनुपात में काफ़ी अंतर है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस समस्या को गहराई से समझा और 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा

राज्य से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना की शुरुआत की। इस योजना का मुख्य उद्देश्य लिंग अनुपात की असमानता में संतुलन लाना और बेटियों को शिक्षा दिलाना है। बेटियाँ पढ़ेंगी तभी देश सही मायने में विकास करेगा। बेटियों को बचाकर एवं उनके मार्ग की प्रत्येक बाधा को दूर करके उन्हें विकास के मार्ग की ओर अग्रसर करना ही मुख्य उद्देश्य है। सरकार द्वारा जगह-जगह ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें बेटियों की संख्या बढ़ाने एवं शिक्षित करने के लिए जागरूक संदेश दिए जा रहे हैं। धीरे-धीरे लोगों की मानसिकता में परिवर्तन भी आ रहा है। बेटी को 'पराया धन' समझने वाले निम्न सोच के लोगों को अधिक जागरुक होने की आवश्यकता है। समाज में ऐसे माहौल का निर्माण करें कि माता-पिता की सोच लड़के और लड़की के लिए समान हो। घर से बाहर निकलने वाली बेटी के लिए उनके मन में सुरक्षा का भय न हो, कोई तनाव न हो। शिक्षित होकर बेटियाँ बहुत हद तक अपनी रक्षा स्वयं कर सकती हैं। अगर उन्हें सामाजिक सुरक्षा भी मिल जाती है तो उनका आत्मविश्वास और बढ़ जाएगा। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह सरकार के साथ-साथ स्वयं भी इस दिशा में हर संभव प्रयास करे। बेटियों को बचाने एवं पढ़ाने की ज़िम्मेदारी हमारी स्वयं की है। उनके मान-सम्मान की रक्षा हमारी ज़िम्मेदारी है। कोई भी उनके आत्मसम्मान को किसी प्रकार की हानि या ठेस पहुँचाता है तो हमें आगे बढ़कर उसे विधिसम्मत दंड दिलाकर अपना कर्तव्य निभाना है।

14. सपना मेरा कितना सुंदर

हर कोई सफल और समृद्ध होना चाहता है। मैं भी अपने क्षेत्र में सफल होने का सपना देखता हूँ हालांकि इस वक्त मैं अपने कैरियर के बारे में निर्णय लेने में जरा असमर्थ हूँ लेकिन मुझे पता है कि जो भी लक्ष्य मैं चुनुँगा उसे प्राप्त करने के लिए मैं ध्यान केंद्रित करते हुए कड़ी मेहनत करूँगा। मैं भी अपने देश के लिए कुछ करने का सपना देख रहा हूँ। हमारे देश में गरीबी, निरक्षरता और जातिवाद आदि इतनी सारी समस्याएँ हैं। हमारा देश एक बार अपनी समृद्धि एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए विख्यात था जिसे बाद में बहुत लूटा गया। देश में अपराध की दर समय-समय पर बढ़ रही है और इसी तरह के अन्य मुद्दे भी हैं। हालांकि भारत की राजनीतिक व्यवस्था में कई खामियाँ हैं जो इन समस्याओं का नेतृत्व कर रही हैं लेकिन इसके लिए हम सरकार को दोष नहीं दे सकते। हममें से हर एक को हमारे देश के विकास के प्रति हमारा योगदान करना चाहिए। मैं हर किसी को शिक्षा देने का समर्थक हूँ जिससे सभी को सीख मिल सके और इसीलिए मैं पिछले दो सालों से अपनी नौकरानी के बच्चे को पढ़ा रहा हूँ। जैसे ही मैं और बड़ा हो जाऊँगा, मैं गरीबों और जरूरतमंदों को सशक्त बनाने के लिए गैर-सरकारी संगठन में शामिल होने का लक्ष्य रखता हूँ। मैं अपने देश से गरीबी और सामाजिक असमानता को खत्म करने का सपना देखता हूँ और इस दिशा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूँगा। यदि हम सभी एक साथ खड़े हो जाएँ तो हम निश्चित रूप से इन बुराइयों से अपने देश को मुक्त करने में सक्षम होंगे।

15. यात्रा जिसे मैं भूल नहीं पाता

कुछ वर्ष पहले हम सभी मित्रों द्वारा एक यात्रा की योजना बनाई गई। हम सभी दोस्तों ने शरदकालीन अवकाश में शिमला जाने को सुनिश्चित किया। शिमला बर्फ़ की गोद में बसा एक शहर है। जैसे हम शिमला पहुँचे वहाँ चारों ओर बर्फ़-ही-बर्फ़। ऐसा लुभावना और रोमांचकारी दृश्य हमलोगों ने कभी सपने में भी नहीं देखा था। बच्चे बर्फ़ में कभी इधर तो कभी उधर घूमते और कभी-कभी तो बीच में भी गिर पड़ते। हम सभी मित्र भी बर्फ़ में काफी देर खेलते रहे। हम घूमते-घूमते जंगल की तरफ निकल गए। तभी अचानक किसी जंगली जानवर की आवाज़ से हम सभी डर गए। मेरे एक मित्र का पैर फिसल गया और वह नीचे एक खाई में जा गिरा। हम सबने उसे बचाने की काफी कोशिश की, लेकिन वह गहरी खाई में जा गिरा। हमलोगों ने झटपट वहाँ के स्थानीय लोगों से मदद माँगी और उसे अस्पताल लेकर भागे। उसकी हालत इतनी गंभीर थी कि हम सभी ने जल्द-से-जल्द वहाँ से वापसी का कार्यक्रम बनाया और वापस अपने शहर आ गए। मेरे मित्र की हालत काफी समय तक स्थिर रही लेकिन अब वह स्वस्थ है। उस घटना का स्मरण जब भी हमारे मन में आता हम आज भी घबरा जाते हैं।

16. भारतीय किसान के कष्ट

भारतीय किसान भारत की पहचान है। वह धरती से जुड़ा हुआ सीधा, सरल एवं सादा जीवन व्यतीत करता है। भारतीय किसान चकाचौंध और आधुनिक फ़ैशन की प्रवृत्ति से परे है। वह तन और मन दोनों से सादगी के गुणों से भरा हुआ है। भारतीय किसान भोला-भाला एवं सच्चा इनसान होने के कारण कई बार अनेक कष्टों का सामना करता है। भारतीय किसान हमारी कृषक संस्कृति की पहचान है। भारत के गाँवों की अधिकतर धरती पर कृषि की जाती है। गाँवों में ही परिश्रमी और लगनशील किसान बसते हैं।

वे दिन-रात कठोर मेहनत करके अन्न और फ़सलें उपजाते हैं। वास्तव में धरती पर किसान ही हमारे अन्नदाता और सृष्टिपालक हैं। भारतीय किसान कठोर जीवन जीता है। वह धरती की छाती को चीरकर बीज बोता है, खाद देता है, जल से सींचता है, दिन-रात पहरा देता है। फ़सलें और अन्न तैयार करके पूरे देश में बाँट देता है। धूप, गरमी, वर्षा, शीत की मार भी उसे कार्य करने से रोक नहीं पाती। कठोर परिश्रम करने के पश्चात भी भारत के किसान को हमेशा गरीबी का मुँह ताकना पड़ता है। उसका शोषण होता रहता है। सेठ-साहूकार एवं बैंक के कर्ज़ तले वह दबा रहता है। बड़ी कठिनाई से अपना व अपने परिवार का पालन-पोषण कर पाता है। परिवार बड़ा होने के कारण ज़मीन बँट जाती है और छोटे-छोटे टुकड़ों में उसे उचित मेहनताना नहीं मिलता। मौसम की मार भी उसकी दुर्दशा का एक प्रमुख कारण है। स्वतंत्रता के पश्चात सरकार ने किसान की दुर्दशा को देखते हुए काफ़ी सराहनीय कदम उठाए हैं। उन्हें सरकारी बैंक आसान ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराते हैं। उनकी फ़सलों का बीमा होने लगा है। बीमा कंपनी भी सहायता के लिए आगे आई है। सरकार ने ऋण माफ़ करने जैसे कदम उठाए हैं। धीरे-धीरे किसान की स्थिति उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो रही है।

17. स्वच्छता आंदोलन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सपने को साकार करते हुए हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान गत कई वर्षों से चलाया हुआ है। अब इस दिशा में तेज़ी से काम हो रहा है। स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत खुले में शौच करने पर रोक लगाई जा रही है। अधिकांश गाँवों में शौचालय बनाए जा चुके हैं, शेष में बनाए जा रहे हैं। स्कूलों में भी शौचालयों की व्यवस्था अंतिम चरण में है। इस स्वच्छता का संबंध हमारे स्वास्थ्य से है। यदि हम स्वच्छता के नियमों का पालन करेंगे तो हमारा जीवन स्वस्थ बनेगा। जहाँ गंदगी होगी, वहाँ बीमारी होगी। स्वस्थ भारत के निर्माण के लिए स्वच्छता को जीवन का अनिवार्य अंग बनाना होगा। इस दिशा में अब पर्याप्त चेतना भी आई है। प्राय: देखा जाता है कि हम अपना घर तो साफ़ रखते हैं, पर घर के बाहर गली-सड़क पर गंदगी फैला देते हैं। यह आदत बहुत बुरी है। हमें अपने आसपास के वातावरण को भी स्वच्छ रखना होगा। स्वच्छ रहकर इसे बचाया जा सकता है। हमें स्वच्छता का पालन सभी स्तरों पर करना होगा। अपने शरीर की सफ़ाई, अपने वस्त्रों की सफ़ाई, पीने के पानी का साफ़ होना, खाने से पहले हाथों को साबुन से धोना—ऐसे कुछ सामान्य नियम हैं, जिनसे हम स्वच्छ और स्वस्थ रह सकते हैं। विदेशों की स्वच्छता की तो सभी प्रशंसा करते हैं, पर हम अपने देश में आते ही इसके प्रति लापरवाह हो जाते हैं। इसे सरकारी अभियान न मानकर अपना अभियान मानना चाहिए। हमें भारत को स्वच्छ बनाकर विश्व में इसकी छवि को सुधारना है। भारत गाँवों का देश है। वहाँ गंदगी अधिक है। इसे दूर करना है। लोगों में जनचेतना जगानी होगी, तभी 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' का संकल्प पूरा हो सकेगा। हमारे दृढ़-निश्चय से यह अवश्य पूरा होकर रहेगा।

18. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

'मन जीता तो जग जीता'—इस आधार पर मानसिक शक्ति को सबसे बड़ी शक्ति माना गया है। जो व्यक्ति मन से सुदृढ़ होता है वह कभी हारता नहीं। इस सूक्ति का आशय है—यदि मनुष्य मन से हार मान लेता है तो उसकी पराजय होती है और यदि वह अपने मन को जीत लेता है तो अवश्य सफल होता है। कमज़ोर और छोटे मन वाला व्यक्ति जीवन के उतार-चढ़ाव में डगमगा जाता है, उसकी सफलता में संदेह रहता है। जिस व्यक्ति के इरादे नेक और अटल होते हैं तो कोई भी बाधा उसके रास्ते में नहीं आती। मनुष्य की समूची गतिविधियों का संचालन मस्तिष्क से होता है और मन का सीधा संबंध मस्तिष्क से होता है। शक्तिशाली और मज़बूत इरादों वाला व्यक्ति अपने बड़े-बड़े शत्रु को परास्त कर देता है। मानसिक बल के सहारे व्यक्ति किसी भी विपदा पर काबू पा लेता है। मन से हारे श्रेष्ठ अर्जुन को श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश देकर मानसिक बल प्रदान किया। हमारे मन में जिस प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं, मस्तिष्क उसी दिशा में कार्य करता है। मन में आए आशा और निराशा के भावों से हमारे जीवन को उसी अनुरूप गति मिलती है। यदि मन में आशा, आत्मविश्वास, सकारात्मकता और उत्साह है तो सभी कार्य स्वयं सफल होते जाते हैं और यदि मन निराशा के अंधकार में डूबा होता है तो किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती। मन की सुदृढ़ता अनिवार्य है। मन पर विजय एवं नियंत्रण पाना अति आवश्यक है। कर्मवीर एवं आशावादी व्यक्ति असंभव को भी संभव कर दिखाता है। मन से हार मानकर केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहना कायरों की निशानी होती है। मन को नियंत्रण में करके ही हम सही दिशा का चुनाव कर सकते हैं। अगर मनुष्य दृढ़-संकल्प करके कुछ करने की ठान लेता है तो कोई सांसारिक बाधा उसका रास्ता नहीं रोक सकती। नेपोलियन की विजय और राजा ब्रूस की कहानी इसके उदाहरण हैं। जीवन में अगर बार-बार असफलता और निराशा मिलती हो तो भी हार नहीं माननी चाहिए अपितु दोगुने उत्साह से आगे कदम बढ़ाना चाहिए। अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु हर संभव प्रयास अति आवश्यक है। मानसिक शक्ति मज़बूत होगी तभी व्यक्ति अपनी शारीरिक शक्तियों का सदुपयोग कर पाएगा। अत: मन पर विजय पानी चाहिए।

19. वृक्षारोपण का महत्व

वृक्षों के बिना धरती की स्थिति को हम किसी मरुस्थलीय प्रदेश के दर्शन करके सहज ही समझ सकते हैं। वृक्ष हमारे लिए अनेक प्रकार से लाभदायक हैं। गरमी की तपती दोपहर में वृक्षों की शीतल छाया का सुख तो वही जान सकता है, जिसने उसका अनुभव किया हो। छाया के अलावा वृक्षों से फल-फूल, जड़ी-बूटी, इमारती लकड़ी एवं ईंधन आदि अनेक आवश्यक सामग्रियाँ हमें प्राप्त होती हैं। वृक्षों से वायु-प्रदूषण के खिलाफ़ लड़ाई में भी मदद मिलती है। वनों से मानसून का चक्र भी संयमित होता है तथा मृदा के क्षरण पर भी रोक लगती है और जल संरक्षण भी संभव होता है। बेल, वट और पीपल जैसे वृक्षों को पवित्र माना जाता है। लोग इन वृक्षों की पूजा करते हैं। बाढ़ की विभीषिका को रोकने तथा मिट्टी को उर्वरक बनाए रखने में वृक्षों का अमूल्य योगदान है। वृक्षों के इस व्यापक महत्व को देखते हुए हर वर्ष वन महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस मौके पर स्कूलों और कॉलेजों में वृक्षारोपण के कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इनसे प्रेरित होकर हमें भी अधिक-से-अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए और प्राकृतिक सौंदर्य तथा स्वास्थ्य का उपहार इन वृक्षों से प्राप्त करना चाहिए।

20. इंटरनेट की दुनिया

इंटरनेट उस ताने-बाने को कहते हैं जो विश्व-भर के कंप्यूटरों को आपस में जोड़ता है। इंटरनेट से सभी जानकारियाँ कंप्यूटरों द्वारा सभी को उपलब्ध हो जाती हैं। इस संचार-तंत्र से संचार जगत में सचमुच एक क्रांति घटित हो गई है। लोगों के सामने जानकारियों का अंबार लग गया है। एक प्रकार से यह ज्ञान का विस्फोट है। इंटरनेट पर ज्ञान की अनंत सामग्री उपलब्ध हो गई है। जितनी ताज़ा खबरें, जितने आधुनिक लेख इंटरनेट पर उपलब्ध हो जाते हैं, उतने तो रोज़-रोज़ छपने वाले अखबारों में भी नहीं मिल पाते। वास्तव में इंटरनेट पल-प्रतिपल बदलता रहता है। इंटरनेट से रेलवे और हवाई जहाज़ के टिकट मिल सकते हैं। बुकिंग की स्थिति का ज्ञान हो सकता है। बच्चों को उनके पाठ्यक्रम की सारी जानकारी इसके माध्यम से मिल सकती है। एक प्रकार से यह शिक्षक की भूमिका भी अदा करता है। इंटरनेट में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री को बार-बार पढ़ा जा सकता है। घर बैठे-बैठे विश्व-भर के समाचार-पत्र पढ़े जा सकते हैं। इंटरनेट की इतनी खूबियाँ होते हुए भी अनेक समस्याएँ हैं। इसका ज्ञान भंडार इतना बड़ा है कि सही जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक समय, ऊर्जा तथा बिजली खर्च करनी पड़ती है। बिजली न हो तो मनुष्य पंगु हो जाता है। इंटरनेट साइबर अपराध करने वालों के लिए स्वर्ग बन गया है। कुशल अपराधी लोगों के बैंक-खातों तथा अन्य कागज़ातों में छेड़छाड़ करके उन्हें घर बैठे-बैठे लूट लेते हैं। अभी इन साइबर अपराधों से बचने के उपायों की जानकारी सबको नहीं है। धीरे-धीरे लोग इन्हें जान जाएँगे तभी इसके दुष्प्रभावों से बचा जा सकेगा।

21. आधुनिक जीवन

आज हम बात करेंगे, हमारे मन की, युवा मन की और उस पर पड़ रहे आधुनिक जीवन-शैली के प्रभावों की। आधुनिक जीवन शैली ने हमें हमारी नैतिकता, संस्कार, आदर-सम्मान, अच्छी सोच, नींद और भी ना जाने ऐसी ही कितनी बहुमूल्य चीज़ों से हमें दूर करके रखा हुआ है, जिसका हमारी ज़िंदगी में शामिल होना बहुत आवश्यक है। अब देखिए ना! पैसे कमाने की होड़, हमारे दिखावे और शौक, नाइट क्लब पार्टियाँ, दोस्तों के साथ घूमना-फिरना, फ़िल्में देखना और टी॰वी॰ चैनलों से उपजी इस आधुनिक जीवन-शैली के कारण, युवा मन इन सब चीज़ों की ओर जाने-अंजाने ही आकर्षित हो चला है। आज ग्लोबलाइजैशन, इंटरनेट और तकनीक में आ रहे बदलाव ने समाज के साथ-साथ खासकर युवाओं को इस तरह प्रभावित किया है कि कुछ वर्षों में ही जीवन-शैली में जबर्दस्त बदलाव आ गया है। जीने का ये अंदाज बिल्कुल नया है, रहन-सहन और खानपान की शैली हो या फिर लोगों के कामकाज और सोचने का तरीका, सभी में बदलाव आ चुका है। आज हम फास्ट लाइफ जीना चाहते हैं, सब कुछ शार्टकट तरीके से जल्दी हासिल करना चाहते हैं, मेहनत कम करना चाहते हैं। मेहनत के कम होने के साथ-साथ आज हमारा रहन-सहन, खाने-पीने का स्तर भी कम हो गया है। कल तक हम जहाँ घर का खाना खाना पसंद करते थे, आज उसकी जगह होटलों के पिज़्ज़ा-बर्गर ने ले ली है। हमारे संस्कार की बात करें तो आज पाँव छूने की जगह, हल्की-सी कमर भी झुक जाए तो गनिमत है। और इन्हीं सब कारणों से युवा अपने मूल्यों, नैतिकताओं, संस्कार, समाज और परिवार के प्रति लापरवाह होते चले जा रहे हैं। अगर हम देखें तो आज युवा में जीवन के विकास के ज़रूरी अनुशासन और मूल्यों का स्थान आधुनिक साजों-सामान, ब्रांडेड कपड़ों और उन्मुक्त जीवन ने ले लिया है। और इनकी गिरफ़्त में आकर युवा मन शराब-सिगरेट पीना, मादक दवाएँ लेना, चुपचाप सैर सपाटा करना, स्कूलों-कॉलेजों से गायब रहना, झुठ बोलना, इंटरनेट पर अश्लिलता से सराबोर होना, ऐसे कपड़े पहनना जिन्हें वे घर में पहनने का साहस नहीं जुटा सकते, जैसी चीज़ों को आधुनिकता के नाम पर अपनी शान समझते

हैं। और यदि समय रहते इसे सुधारा नहीं गया तो इसके परिणाम काफी गंभीर हो सकते हैं और इससे बचने के लिए हमें और खासकर युवाओं को जागरुक, जिम्मेदार और क्या वाकई में सही है और क्या गलत, इसका फ़ैसला करने की क्षमता होना ज़रूरी है। दोस्तों, आधुनिकता कोई बुरी बात नहीं है, बुरी बात है, तो बस इस आधुनिकता की आंधी में मूल्यों का ह्रास, नैतिकता का पतन और मर्यादाओं का उल्लंघन। वैसे भी आपने यह तो सुना ही होगा कि चमकने वाली हर चीज़ सोना नहीं होती। इसीलिए अगर अपने आपको चमकाना ही है तो अपने मन को, अपने विचारों को चमकाएँ, न कि इस चमकदार दिखने वाली, दिखावटी आधुनिकता के मुखौटे को!

22. जंगल की सुरक्षा

जंगल और पर्यावरण का बहुत गहरा संबंध है। प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने के लिए पृथ्वी के 33 प्रतिशत भाग को हरा-भरा होना चाहिए। वन जीवनदायक हैं। ये वर्षा कराने में सहायक होते हैं। धरती की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाते हैं। वनों से भूमि का कटाव रोका जा सकता है। वनों से मृदा-अपरदन को रोका जा सकता है। रेगिस्तान का फैलाव रुकता है, सूखा कम पड़ता है। इससे ध्वनि-प्रदूषण की भयंकर समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। वन ही नदियों, झरनों और अन्य प्राकृतिक जल स्रोतों के भंडार हैं। वनों से हमें लकड़ी, फल-फूल, खाद्य पदार्थ, गोंद तथा अन्य सामान प्राप्त होते हैं। आज भारत में दुर्भाग्य से केवल 23 प्रतिशत वन बचे हैं। जैसे-जैसे उद्योगों की संख्या बढ़ रही है, शहरीकरण हो रहा है, वाहनों की संख्या बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे वनों की आवश्यकता और अधिक बढ़ती जा रही है। वन संरक्षण एक कठिन एवं महत्वपूर्ण काम है। इसमें हर व्यक्ति को अपनी ज़िम्मेदारी समझनी पड़ेगी और अपना योगदान देना होगा। अपने घर, मोहल्ले और नगर में भारी संख्या में वृक्षारोपण को बढ़ावा देकर इसको हमें एक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना होगा। इसके अतिरिक्त हमें जंगल एवं जंगल में रहने वाले जंगली जानवरों आदि की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी।

23. कैसे बदलेगी दुनिया फुटपाथ की

मेरे विचार इस विषय पर यह है, फुटपाथ की दुनिया को बदला जा सकता है। जब सब जगह बच्चे से लेकर बड़ों तक सब शिक्षित होंगे। सब अपनी मेहनत से काम करके पैसा कमा सकते हैं। आज के समय में कोई मेहनत नहीं करना चाहता बस लोगों से पैसे मांगने की आदत पड़ गई है और यह लोग फिर फुटपाथ और सड़कों पर सो जाते हैं। सरकार को ऐसे नियम बनाने चाहिए, लोगों को मेहनत करने के लिए बढ़ावा देना चाहिए। हमेशा उनका साथ चाहिए। आए दिन हम रोज़ खबरों में सुनते हैं फुटपाथ में रहने वाले लोग मर जाते हैं। इन सबकी दुनिया को बदलने के लिए सरकार को उनका सहयोग देना चाहिए। 'फुटपाथ' सड़क के किनारे पैदल चलने वाले यात्रियों के लिए सुरक्षित रास्ता होता है। इन सुरक्षित पथ को पगडंडी भी कहा जाता है। फुटपाथ पैदल यात्रियों के चलने के साथ-साथ गरीबों के निवास और अर्थ उपार्जन के काम भी आते हैं। फुटपाथ की सबसे बड़ी समस्या इसका अतिक्रमण होना है। नगर पालिका के ध्यान नहीं देने या भ्रष्ट होने के कारण कई तरह के गैर कानूनी दुकान फुटपाथ पर खुल जाने से अतिक्रमण की समस्या उत्पन होती है। गरीबों के लिए सरकार की तरफ से समुचित रैनबसेरा नहीं होने के कारण रात में सोने हेतु इन फुटपाथों का अतिक्रमण कर लेते हैं। अतिक्रमण के कारण पैदल यात्रियों को असुरक्षित रोड पर चलने के लिए मजबूर हो जाते हैं। फुटपाथ को अतिक्रमण मुक्त करवाने के लिए हमें संगठित प्रयास करने की जरूरत है। फुटपाथ पर दुकान चलाने वालों को नगर निगम दुकान बना कर वहाँ विस्थापित करें इसके लिए प्रयासरत रहने की जरूरत है। जरूरतमंद के सोने के लिए सरकारी रैनबसेरा का अधिक-से-अधिक निर्माण करने से अतिक्रमण हटाना संभव हो पाएगा। जनसंख्या वृद्धि, देश में घुसपैठियों की समस्या और गरीबों के उत्थान हेतु सरकारी योजनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने से फुटपाथ अपने वास्तविक कार्य को करने के लिए अतिक्रमण मुक्त हो जाएगा। इसके लिए हमें सामूहिक, संगठित और सतत् प्रयास निरंतर करना पड़ेगा।

24. सार-सार को गहि रहे, थोथो देय उड़ाय

उपरोक्त सूक्ति का अर्थ है—साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय, सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाए।

कबीरदास जी कहते हैं कि सज्जन लोगों का आचरण सूप के समान होता है। जिस तरह सूप अनाज में से बेकार कणों को उड़ा देता है तथा उपयोगी अनाज को अपने पास रखता है, उसी तरह सज्जन लोग भी व्यर्थ की बातों पर ध्यान नहीं देते और व्यर्थ की बातों को हवा में उड़ा देते हैं तथा जो बातें उनके लिए उपयोगी होती हैं, उसी बात को ग्रहण करते हैं। सज्जन का यही स्वभाव होता है कि वह किसी भी बात में से उपयोगी ज्ञान को अपने पास रखते हैं और बेकार की बातों को छोड़ देते हैं। कथन

के स्पष्टीकरण को हंस के द्वारा दूध और पानी को अलग करने के उदाहरण से समझा जा सकता है। महात्मा बुद्ध डाकू अंगुलिमाल को सही रास्ते पर ले आए और उसके दुर्गुणों का त्याग करवाया। हमारे धार्मिक और पौराणिक कथाओं में उपरोक्त दोहे के समर्थन और स्पष्टीकरण के लिए अनेक उदाहरण मौजूद हैं। उपरोक्त दोहे का मूल उद्देश्य समाज में गलत करने वाले व्यक्तियों को सही राह पर लाना है। उनके अंदर ज्ञान का अलख जगाकर उनको सत्यमार्ग पर वापस लाना है। समाज से बुराई का नाश करने के लिए बुरे व्यक्ति को सही मार्ग पर लाना ही श्रेष्ठ उपाय है। इससे समाज में आपसी सहयोग और सुकर्म के प्रति लोगों का आस्था बढ़ेगा। ऐसे विचारों की अभिव्यक्ति से मानव के अंदर मानवता का पुन: उदय होता है। मानवता का उदय प्राणियों के कल्याण का रास्ता प्रशस्त करता है। बुरे व्यक्ति के त्याग के बदले उसकी बुराई का अंत करने से मानव जाति का संपूर्ण कल्याण संभव है।

2. औपचारिक पत्र-लेखन

प्रश्न सं॰ 1, 2, 3, 4, 5 छात्र स्वयं करें।

6. अपने नगर विकास प्राधिकरण के सचिव को अपनी कॉलोनी के पार्क को विकसित करने के लिए पत्र लिखिए।

संगम कॉलोनी

नई दिल्ली

11 अक्तूबर, 20XX

सचिव

नगर विकास प्राधिकरण

नई दिल्ली

विषय: कॉलोनी का पार्क विकसित करने हेतु

महोदय

मैं संगम कॉलोनी का निवासी हूँ। जब यह कॉलोनी बनी, उस समय नक्शे में यह दिखाया गया था कि यहाँ एक सुंदर पार्क बनेगा। कॉलोनी में प्राधिकरण की ओर से पार्क के लिए जगह भी छोड़ी गई है, लेकिन दस साल बीत जाने पर भी यहाँ कोई पार्क नहीं बना है। पार्क की उस जगह का आजकल बुरा हाल है। लोगों ने अपने-अपने घर के सामने उस पार्क में कूड़ेदान बना लिए हैं। बाहर से आकर मवेशी वहाँ गंदगी फैलाते रहते हैं। यही नहीं, कुछ लोगों ने पार्क में अपनी झुग्गियाँ भी बना ली हैं तथा वहाँ डेरा ही जमा लिया है। सारी कॉलोनी उस पार्क की जगह में फैली गंदगी के कारण परेशान है। चारों ओर गंदगी और बदबू के अलावा और कुछ भी नहीं है।

अत: आपसे अनुरोध है कि कृपा करके आप उस पार्क को विकसित कराएँ। अपने कर्मचारी भेजकर तुरंत सभी कूड़ेदान उठवाएँ तथा पुलिस अधिकारियों से कहकर वहाँ डेरा जमाए हुए लोगों को हटवाने की कृपा करें। पार्क के चारों ओर काँटों वाली बाड़ लगवाएँ। हम सभी कॉलोनीवासी हर प्रकार से आपका सहयोग करने को तैयार हैं। आशा है, आप इस ओर ध्यान देंगे तथा इस दिशा में अविलंब आवश्यक कदम उठाएँगे।

धन्यवाद

भवदीय

क॰ख॰ग॰

प्रश्न सं॰ 7 छात्र स्वयं करें।

8. क्षेत्र में बढ़ते अपराधों की सूचना देते हुए क्षेत्र के थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

थानाध्यक्ष महोदय

संत नगर, बुराड़ी

नई दिल्ली-110084

28 नवंबर, 20XX

विषय: अपराधों की रोकथाम हेतु

महोदय

पिछले कुछ समय से बुराड़ी क्षेत्र में अपराधों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है। कुछ दिन पूर्व बाबा कॉलोनी में दिन-दहाड़े एक व्यक्ति को गोली से उड़ा दिया गया। पिछले सप्ताह इस क्षेत्र में पाँच युवतियों के साथ बलात्कार की घटना हुई। पिछले

दो–तीन दिनों में कौशिक इंक्लेव से चार कारें चोरी हो गईं हैं। आपसे अनुरोध है कि शीर्घ–अति–शीघ्र इस क्षेत्र में पुलिस–गश्त का उचित प्रबंध करें। अपराधियों से मेलजोल रखने वाले पुलिस कर्मचारियों के विरुद्‌ध कड़े कदम उठाएँ तथा बढ़ते अपराधों की रोकथाम का प्रयास करें।

आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

भवदीय

क॰ख॰ग॰

ए–44, संत नगर

दिल्ली–110084

प्रश्न सं॰ 9, 10, 11, 12, 13 एवं 14 छात्र स्वयं करें।

15. अपने क्षेत्र के बिजली विभाग के अधिकारी को अपना बिजली बिल ठीक कराने के लिए पत्र लिखिए।

गीता कॉलोनी

नई दिल्ली

12 अगस्त, 20XX

व्यावसायिक अधिकारी

दिल्ली विद्‌युत संस्थान

गीता कॉलोनी, दिल्ली।

विषय : बिजली के बिल में गड़बड़ी के संबंध में

महोदय

नम्र निवेदन यह है कि इस माह मेरा बिजली का बिल 1610XX रुपये आया है। इसमें वर्तमान माह के 707.22 रुपये तथा एरियर 902.78 रुपये लिखे हैं। जबकि गत माह मैं अपना 902.78 रुपये का बिल जमा करा चुका हूँ। इस बिल के भुगतान की रसीद मेरे पास है। इसकी प्रतिलिपि मैं इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ। अत: मेरी समस्या का समाधान करने के लिए मामले की छानबीन करें, जिससे मैं वर्तमान बिल का भुगतान यथासमय कर सकूँ।

सधन्यवाद

भवदीय

क॰ख॰ग॰

प्रश्न सं॰ 16, 17 एवं 18 छात्र स्वयं करें।

19. यात्रा में रेल कर्मचारी के अभद्र व्यवहार की शिकायत करते हुए रेल अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

रोड नं॰ 58, पंजाबी बाग

दिल्ली

24 नवंबर, 20XX

प्रभाग अधीक्षक

उत्तर रेलवे, नई दिल्ली

विषय : रेलवे कर्मचारी के अशिष्ट व्यवहार के संबंध में

मान्यवर

निवेदन है कि गत 22 नवंबर को मैं नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से चलने वाली देहरादून एक्सप्रेस से खतौली जा रहा था। मुझे बड़े खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि मार्ग में एक रेलवे कर्मचारी ने मेरे साथ अत्यंत अशिष्ट व्यवहार किया। उस कर्मचारी का नाम क॰ख॰ग॰ है और उसका नंबर–टी॰टी॰आइ॰......है। पूरी घटना इस प्रकार है– मैं 22 नवंबर को सुबह नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से देहरादून एक्सप्रेस में चढ़ा। मेरे साथ मेरे दो भाई भी थे। मैंने अपना और अपने एक भाई का टिकट लिया हुआ था। चूँकि मेरा छोटा भाई अभी तीन वर्ष का नहीं था, इसलिए मैंने उसका टिकट नहीं लिया था।

गाड़ी जब आगे बढ़ी तब उक्त टिकट निरीक्षक ने प्रवेश किया। मुझसे जब टिकट माँगे गए तब मैंने सब टिकट दिखा दिए। उसने जब मेरे छोटे भाई का टिकट माँगा तब मैंने बता दिया कि वह अभी तीन साल का ही नहीं हुआ है। इस पर उसने मुझे झूठा बताकर डिब्बे में बैठे सभी यात्रियों के सामने अपमानित किया। इतने पर भी मैं उसका आधा टिकट लेने को तैयार हो गया लेकिन वह तो मुझसे जुर्माने की रकम तथा टिकट के पैसे वसूलना चाह रहा था। जब मैंने इनकार किया तब उसने मुझे जेल भेजने की धमकी भी दी। इस पत्र के साथ मैं आपको प्रमाण के लिए अपने भाई का जन्म प्रमाण-पत्र भेज रहा हूँ। आप कृपा करके उससे इस बात का स्पष्टीकरण माँगें कि उसने ऐसा अभद्र व्यवहार क्यों किया?

मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपया मेरे इस पत्र पर गौर करें तथा मुझे सूचित करने का कष्ट करें कि आपने इस संदर्भ में क्या कदम उठाए हैं?

धन्यवाद सहित

भवदीय

अ॰ब॰स॰

प्रश्न सं॰ 20, 21, 22, 23 छात्र स्वयं करें।

3. सूचना-लेखन

प्रश्न सं॰ 1, 2, 3, 4 छात्र स्वयं करें।

5. विद्यालय में 'रक्तदान शिविर' लगाया जा रहा है। इसके समय, स्थान, तिथि की सूचना देते हुए स्कूल के श्यामपट्ट पर लगाने के लिए सूचना लिखिए।

रक्तदान शिविर

सूचना

25 सितंबर, 20XX

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि 2 अक्टूबर, 'गाँधी जयंती' के अवसर पर 'भारत विकास संस्थान' के सहयोग से क.ख.ग. स्कूल में निःशुल्क रक्त-जाँच व रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर का समय सुबह 6 बजे से सायं 5 बजे तक रहेगा। आप सबसे अनुरोध है कि इस कार्यक्रम में 'रक्तदान' कर जन-कल्याण में अपना सहयोग प्रदान करें।

ललित मिश्रा
प्रभारी

6. सामान गुम हो जाने या पाए जाने की सूचना देने हेतु सूचना-लेखन कीजिए। [*CBSE* (*Outside*) *2015*]

राजकीय विद्यालय, नोएडा (यू.पी.)

सूचना

10 जुलाई, 20XX

पर्स खोने के संदर्भ में

सभी को सूचित किया जाता है कि कल 9 जुलाई, 20..... को मेरा काले रंग का पर्स विद्यालय परिसर में कहीं गिर गया था। पर्स में 100 रुपये, स्कूल का परिचय-पत्र और कुछ आवश्यक कागज़ात हैं। सभी से निवेदन है कि यदि वह किसी को मिले तो कृपया उसे प्रधानाचार्य कार्यालय में आकर दे दें।

सरिता वर्मा
कक्षा-दसवीं

प्रश्न सं॰ 7, 8, 9, 10, 11, 12 एवं 13 छात्र स्वयं करें।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

सभी प्रश्न छात्र स्वयं करें।

4. विज्ञापन-लेखन

1. अपने पुराने घरेलू फर्नीचर को बेचने के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

आधे से भी कम दाम पर,

पुराना घरेलू फर्नीचर

- डबल बैड-2
- डाइनिंग टेबल (6 कुरसियों वाला)
- दो आराम कुरसियाँ
- लकड़ी की एक अलमारी
- सोफासेट-1

जल्दी करें, कहीं मौका हाथ से निकल न जाए।

संपर्क करें : सी-1, जनकपुरी, नई दिल्ली, मो॰: 9868.............

प्रश्न सं॰ 2 एवं 3 छात्र स्वयं करें।

4. कान्हा डेयरी के उत्पादों (जैसे– दूध, दही, पनीर) के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

कान्हा डेयरी

- दूध
- दही
- पनीर
- छाछ

- मलाईदार
- स्वास्थ्यवर्धक
- सस्ता
- स्वादिष्ट

5 लीटर
दूध के
साथ
1 लीटर
दूध फ्री

सभी पैक साइज़ों में उपलब्ध– फुल क्रीम, टोंड और डबल टोंड

5. ग्रेस वॉशिंग मशीन की विशेषताएँ बताते हुए विज्ञापन तैयार कीजिए।

धमाका

धमाका

कपड़े धुलाई की दुनिया में क्रांति

ग्रेस वाशिंग मशीन

- सबसे साफ़ धुलाई
- आकर्षक रंग
- लुभावनी डिजाइन
- पाँच विभिन्न रंगों में उपलब्ध

सेमी ऑटोमेटिक एवं फूली ऑटोमेटिक

कम बिजली खाए पैसे बचाए।

आकर्षक दाम

इस महीने खरीदने पर पाँच किलो एरियल पाउडर फ्री

संपर्क करें: क०ख०ग० इलेक्ट्रिकल एप्लाएन्सेज़

प्रश्न सं० 6 एवं 7 छात्र स्वयं करें।

8. प्रगति काउंसिल की ओर से आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए मुफ़्त कंप्यूटर कोर्स का विज्ञापन तैयार कीजिए।

प्रगति काउंसिल

आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए कंप्यूटर प्रशिक्षण की मुफ़्त सुविधा

• पहले आएँ, पहले पाएँ • सीमित सीट • प्रवेश 28 अगस्त से आरंभ

प्रमुख बिंदु

- होनहार छात्रों के लिए छात्रवृत्ति
- प्रशिक्षण के बाद नौकरी पाने में कारगर
- अनुभवी एवं प्रशिक्षित प्रशिक्षक
- 3 महीने, 6 महीने और एक वर्ष के लिए कोर्स

संपर्क करें: प्रात: 9.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक • प्रगति काउंसिल, एफ-205/335 पीतमपुरा

9. अपनी पुरानी स्कूटी बेचने हेतु विज्ञापन लिखिए।

प्रश्न सं॰ 10, 11 एवं 12 छात्र स्वयं करें।

13. आपकी बड़ी बहन ने संगीत सिखाने की एक संस्था खोली है। इसके लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

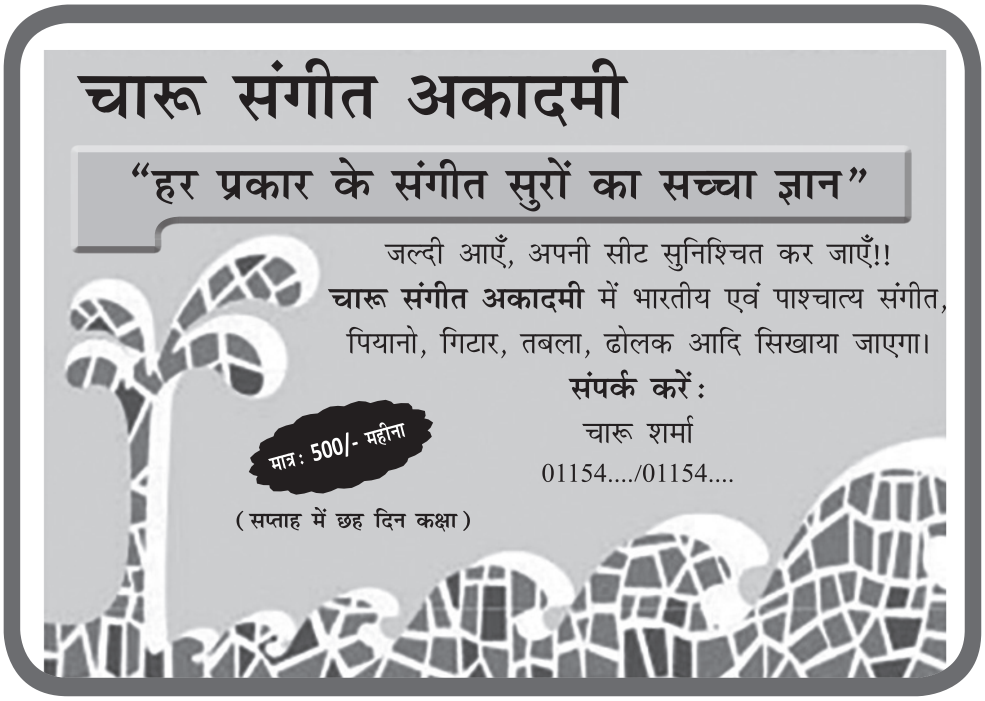

14. आपके भाई ने 'टेस्टी आइसक्रीम' की एक फैक्ट्री लगाई है। आइसक्रीम के प्रचार हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।

टेस्टी आइसक्रीम

- बेहतरीन टेस्ट जो मदहोश कर दे
- एक बार खाओगे, तो बार-बार आओगे
- मेवों व फलों से युक्त
- अलग-अलग स्वाद में उपलब्ध
- खाए बिना रहा न जाए
- फ्री होम डिलीवरी

मात्र 10 रुपये से शुरू संपर्क : 87.............

प्रश्न सं॰ 15, 16 एवं 17 छात्र स्वयं करें।

18. एक कोचिंग संस्थान वेु प्रचार के लिए विज्ञापन लिखिए।

पढ़ाई की दुनिया में एक नया नाम!

प्रांजल कोचिंग सेंटर

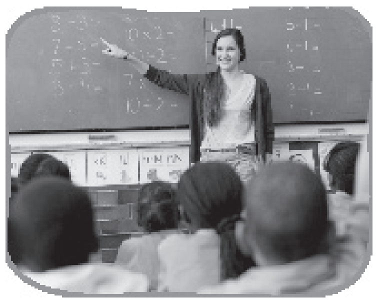

हमारे यहाँ पढ़ते जाइए ओर आगे बढ़ते जाइए

- ✓ अनुभवी अध्यापकों द्वारा अध्यापन
- ✓ सटीक एवं सरल भाषा में पढ़ाई
- ✓ विषयवस्तु से संबंधित

सीटें सीमित
जल्दी आयें,
अपनी सीट पायें

खुद भी आएँ, एवं
अपने साथियों को
भी लाएँ।

संपर्क करें– 011-2763...

प्रश्न सं॰ 19 एवं 20 छात्र स्वयं करें।

गत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

सभी प्रश्न छात्र स्वयं करें।

5. लघुकथा-लेखन

1. **स्वावलंबन का सुख**

   यह कहानी मेरे पड़ोस में रहने वाली एक लड़की की है। लड़की का नाम ज्योति है। मैंने ज्योति के जीवन में घटी सभी परेशानियों को देखा है और उसने कैसे हिम्मत से उन परेशानियों का सामना करते हुए कैसे आगे बढ़ी है यह भी जाना है। उसके जीवन की यह घटना हम सबके लिए कहानी बन गई है जिससे हमें सिख लेनी चाहिए।

   ज्योति बहुत ही सरल और समझदार लड़की थी। पढ़ाई में वह बहुत अच्छी थी। वह एक मध्यम परिवार से थी। पढ़ाई होने के बाद उसकी शादी करवा दी। शादी के बाद ही ज्योति को उसके ससुराल वाले तंग करने लगे थे। उसे दहेज के लिए तंग करना शुरू कर दिया। ज्योति कुछ समय तक चुप रही और सभी अन्याय सहती रही। कहते हैं न अन्याय भी कुछ हद तक ही सहा जाता है। ज्योति ने अब दहेज के खिलाफ़ आवाज उठाई। उसने महिला पुलिस थाने में जाकर शिकायत दर्ज करवाई। ज्योति किसी से डरी नहीं, उसने साहस से काम लिया और अपनी मेहनत से सरकारी नौकरी के लिए तैयारी की और परीक्षा पास करके नौकरी लग गई। वह अपने जीवन में खुश थी, किसी के ऊपर निर्भर नहीं थी। जब उसकी नौकरी लग गई तब उसके ससुराल वाले उससे माफी माँगने लगे लेकिन उसने उन्हें अच्छे से सबक सिखाया और अब वह अपना जीवन अपने हिसाब से व्यतीत करती है। वह किसी की गुलाम नहीं है। सच में उसे देखकर हिम्मत मिलती है।

2. छात्र स्वयं करें।

3. एक किसान के पास एक गधा था। वह किसान अपने गधे से सारा काम लिया करता था। वह गधे को अपने साथ हमेशा बाज़ार लेकर जाया करता था। जिससे सामान को उसकी पीठ पर रखकर लेकर आए। किसान जब भी अपने खेत पर जाता था। अपने गधे को भी साथ लेकर जाया करता था। क्योंकि वह उस गधे से सभी कार्य करवाता था। लेकिन गधा सोचता था कि किसान मुझे खाने को ज्यादा नहीं देता है, लेकिन मुझसे बहुत ज्यादा काम करवाता है। जिससे मेरे शरीर में भी दिक्कतें आनी शुरू हो गई हैं। एक दिन वह किसान बाज़ार जाने के लिए तैयार हो रहा था, तभी उसने अपने गधे को खड़ा किया और उस पर सामान रखने लगा। सामान रखते-रखते ही गधा नीचे बैठ गया, अब गधा समझ चुका था कि अगर मैं रोज़-रोज़ काम पर जाऊँगा, तो यह मुझे बहुत ही कमजोर बना देगा। जिससे मुझे आगे चलने में भी परेशानी होगी। इसलिए गधा चलने को तैयार नहीं था। किसान ने सोचा यह गधा आज काम पर क्यों नहीं जा रहा है। अगर यह नहीं जाएगा तो मैं सामान को कैसे लेकर आऊँगा। तभी किसान ने सोचा कि मुझे इंतज़ार करना चाहिए। कल ठीक हो जाएगा, तभी मैं कल बाज़ार जाऊँगा। जब अगली सुबह किसान उठा, तो देखने लगा कि अभी गधा कैसा है, जब वह गधे के पास गया, तो गधा वैसे ही बैठा था, इसका मतलब किसान सोच रहा था कि यह गधा काम करने के लिए तैयार नहीं है। उसके बाद किसान ने गधे के ऊपर बहुत सारा सामान रख दिया और एक डंडा उठाया। गधे ने डंडे को देखा, किसान ने सोचा कि अगर यह डंडा देखकर डर गया है। इसका मतलब यह चलने के लिए तैयार है और यह इसलिए नहीं जा रहा था क्योंकि इस पर समान ज्यादा रखा हुआ था। गधे ने सोचा कि इसने मुझे डंडे के सहारे खड़ा किया है। इसलिए मैं बाज़ार में इसको जरूर मज़ा चखाऊँगा, किसान और गधा बाज़ार में पहुँचे और सामान भी ज्यादा खरीद लिया गया और उसके बाद किसान भी गधे के ऊपर बैठ गया। सारा सामान भी उसी पर रखकर आगे बढ़ने लगा, कुछ दूरी तय करने के बाद ही गधे ने कीचड़ में किसान को गिरा दिया और सारा सामान भी वहीं पर गिर गया। अब किसान को बहुत ज्यादा गुस्सा आ रहा था। वह उठा, उसने डंडा उठाया और उसे पीटना शुरू किया। गधा वहाँ से भागता हुआ अपने घर की ओर जाने लगा। किसान भी जैसे-तैसे अपने सामान को लेकर घर पहुँचा और देखा गधा वहीं पर खड़ा है। उसने गधे को पीटना शुरू कर दिया। गधे को अच्छा नहीं लग रहा था। इसलिए गधे ने भी किसान पर हमला शुरू कर दिया, उधर किसान डंडे से पीट रहा था और गधा भी उस पर हमला कर रहा था। ऐसा देखकर कुछ लोग वहाँ पर आ गए और हँसने लगे। क्योंकि आज इंसान और गधे के बीच में लड़ाई हो रही थी। कुछ देर बाद लोगों ने दोनों को आपस में छुड़ाया।

4. बचपन के वह दिन बहुत अच्छे और मासूम थे। जब हमें किसी भी बात की चिंता नहीं होती थी। पूरा समय शरारतों में और खेलने में निकल जाता था। कोई हमें रोकता नहीं था। बचपन के दिनों में मार भी बहुत पड़ती थी लेकिन प्यार भी बहुत मिलता

था। यह आज एहसास होता है। बालपन की वह चंचलता आज भी याद आती है, जब छोटी-छोटी बातों के लिए अपने माता-पिता के सामने मचल जाते थे। तरह-तरह के खिलौनों का संग्रह करना, घर-घर खेलना आदि। मैं अपने बचपन की बात करूँ तो मैं बहुत शरारती थी। सबसे लड़ना और मारना, तंग करना आदि मेरे प्रिय शौक थे। एक बार मैंने स्कूल में अपने साथ पढ़ने वाली लड़की का पूरा खाना खा लिया और उसे बताया भी नहीं। जब उसे पता चला तो वह बहुत रोई और उसने मैडम से शिकायत लगा दी। मैडम से स्कूल में बहुत मार पड़ी। यह बात घर तक पहुँच गई। घर पर आकर भी मार पड़ी। जब धीरे-धीरे बड़े हुए, समझ आने लगा। शरारतें बचपन में ही अच्छी लगती हैं।

5. एक दिन की बात है कपिल खींझते हुए बोला–"अरे इतने दिनों से घर में बैठे-बैठे बोर हो रहा था सोचा ज़रा यार-दोस्तों से मिल आऊँ। पर क्या पता था की पुलिस गेट के बाहर ही खड़ी है? चलो फिर से देखता हूँ शायद वह पुलिस वाला चला गया हो"। कपिल धीरे से गेट के बाहर झाँकने लगा पुलिस वाले को न देखकर बड़ा खुश हुआ और छुपते-छुपाते अपने दोस्त संजय के घर पहुँच गया। पर यह क्या! संजय ने तो बाहर आने से ही मना कर दिया। बोला–"माफ़ करना कपिल भाई, मैं तो इस समय लॉकडाउन का कड़ाई से पालन कर रहा हूँ। मेरी सलाह मानो तुम भी पालन करो और घर लौट जाओ, इसी में देश की और हमारी भलाई है।"

दोस्त की बात सुनकर कपिल बोला–"ठीक है तुम डरकर बैठे रहो मैं कौशिक के यहाँ जा रहा हूँ।" यह कहते हुए वह गुस्से में आगे बढ़ गया। रास्ते में एक अजनबी दिखा जो उसी तरफ़ जा रहा था। कपिल के कहने पर उसने लिफ्ट दे दी और दूसरे मोहल्ले तक छोड़ दिया।

कपिल खुशी-खुशी धन्यवाद देते हुए बोला–"भाई तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो?"

अजनबी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया–"भाई मुझे नहीं पहचाना? मैं कोरोना हूँ तुम जैसे लोगों के लिए ही बाहर घूमता रहता हूँ।", तब से कपिल अस्पताल में है।

6. मेरे पड़ोस में एक मशहूर चित्रकार रहता था। एक रोज़ की बात है उसने बहुत सुंदर एक पेटिंग बनाई और उसे नगर के बीचोंबीच लटका दिया और उस पर नीचे लिख दिया कि जिस किसी को भी इसमें कमियाँ नज़र आए वह उस जगह पर निशान लगा दे उसने शाम को देखा तो बहुत दुखी हुआ क्योंकि उसकी पूरी तस्वीर पर निशान लगे हुए थे और वह पूरी तरह से खराब हो चुकी थी उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे।

इसी दुखी मन वाली स्थिति में वह बैठा था तभी मैं उसके पास गया और उससे दुखी होने का कारण पूछा। चित्रकार ने मुझसे अपनी समस्या बताई। इस पर मैंने उसे कहा कल एक दूसरी तस्वीर बनाना और उसे भी शहर के बीचोंबीच लटका देना और नीचे लिख देना कि इस तस्वीर में जिस किसी को भी कोई कमी नज़र आए तो उसे ठीक कर दे। चित्रकार ने अगले दिन यही किया। शाम को जब उसने तस्वीर देखी तो बड़ा हैरान हुआ, क्योंकि किसी ने तस्वीर पर कुछ भी नहीं किया था। वह संसार की नीति अब तक समझ चुका था। किसी की कमियाँ निकालना आसान होता है। बड़ी आसानी से लोग किसी की बुराई और निंदा करते हैं, लेकिन उस कमी को दूर करना उतना ही मुश्किल होता है। अचानक इस छोटी-सी घटना ने मुझे बहुत दुखी कर दिया।

7. नौवीं कक्षा की हिंदी की क्लास चल रही थी। शिक्षक महोदय ने छात्रों से 'मेरा सपना' विषय पर निबंध लिखने को कहा। सभी बच्चों ने अपने-अपने हिसाब से निबंध लिखे। किसी का सपना इंजीनियर बनने का था तो किसी का डॉक्टर। किसी को नृत्य में महारत हासिल करनी थी तो किसी को गायन में। हर बच्चा कुछ बड़ा करने का ही सपना देख रहा था। अध्यापक हर बच्चे का निबंध चेक कर रहे थे। मैंने लिखा कि मैं बड़े होकर खूब पैसा कमाना चाहता हूँ, ताकि उन पैसों से एक बस खरीद सकूँ। अध्यापक महोदय की समझ में नहीं आया कि आखिर मैं बस खरीदकर क्या करूँगा? लेकिन जैसे ही अध्यापक महोदय ने आगे निबंध पढ़ा, वे सब कुछ समझ गए।

मैंने लिखा था–मेरे पापा के पास कार है। उसमें सिर्फ़ चार ही लोग बैठ सकते हैं। इसलिए कहीं भी जाना रहता है तो मेरे मम्मी-पापा और हम दोनों बहन-भाई ही जाते हैं। मेरे दादा-दादी घर पर ही रहते हैं। मेरे दादा-दादी बहुत अच्छे हैं। वे मुझसे बहुत प्यार करते हैं। मैं भी उन्हें बहुत प्यार करता हूँ। जब भी हम चारों घूमने जाते हैं तब उन दोनों का चेहरा उदास हो जाता हैं। मुझे लगता है कि दादा जी और दादी जी भी हमारे साथ घूमने चलें। पापा कहते हैं कि उन दोनों में से एक व्यक्ति की तो

कार में जगह हो सकती है, लेकिन दोनों की जगह नहीं हो सकती। अब दोनों में से किसको बैठाएँ और किसको छोड़ें... इसलिए दोनों को ही छोड़ देते हैं! बस इसलिए मैं पैसा कमाकर बस खरीदना चाहता हूँ।

8. मनुष्य को अपने विकास के लिए समाज की आवश्यकता हुई। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए समाज की प्रथम इकाई के रूप में परिवार का उदय हुआ। क्योंकि बिना परिवार के समाज की रचना के बारे में सोच पाना असंभव था। समुचित विकास के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक, शारीरिक, मानसिक सुरक्षा का वातावरण का होना नितांत आवश्यक है। परिवार में रहते हुए ही भावी पीढ़ी को उचित मार्ग-निर्देशन देकर जीवन संग्राम के लिए तैयार किया जा सकता है। आज भी संयुक्त परिवार को ही संपूर्ण परिवार माना जाता है। वर्तमान समय में भी एकल परिवार को एक मज़बूरी के रूप में ही देखा जाता है। हमारे देश में आज भी एकल परिवार को मान्यता प्राप्त नहीं है। औद्योगिक विकास के चलते संयुक्त परिवारों का बिखरना जारी है। परंतु आज भी संयुक्त परिवार का महत्व कम नहीं हुआ है। संयुक्त परिवार के महत्व पर चर्चा करने से पूर्व एक नज़र संयुक्त परिवार के बिखरने के कारणों एवं उसके अस्तित्व पर मँडराते खतरे पर प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं। संयुक्त परिवारों के बिखरने का मुख्य कारण है–रोज़गार पाने की आकांक्षा। बढ़ती जनसंख्या तथा घटते रोज़गार के कारण परिवार के सदस्यों को अपनी जीविका चलाने के लिए गाँव से शहर की ओर या छोटे शहर से बड़े शहरों को जाना पड़ता है और इसी कड़ी में विदेश जाने की आवश्यकता पड़ती है। परंपरागत कारोबार या खेतीबाड़ी की अपनी सीमाएँ होती हैं, जो परिवार के बढ़ते सदस्यों के लिए सभी आवश्यकताएँ जुटा पाने में समर्थ नहीं होता। अतः परिवार को नए आर्थिक स्त्रोतों की तलाश करनी पड़ती है। जब अपने गाँव या शहर में नयी संभावनाएँ कम होने लगती हैं तो परिवार की नयी पीढ़ी को रोज़गार की तलाश में अन्यत्र जाना पड़ता है। अब उन्हें जहाँ रोज़गार उपलब्ध होता है वही अपना परिवार बसाना होता है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं होता की वह नित्य रूप से अपने परिवार के मूल स्थान पर जा पाए। कभी-कभी तो सैंकड़ों किलोमीटर दूर जाकर रोज़गार करना पड़ता है। संयुक्त परिवार के टूटने का दूसरा महत्वपूर्ण कारण नित्य बढ़ता उपभोक्तावाद है। जिसने व्यक्ति को अधिक महत्वाकांक्षी बना दिया है। अधिक सुविधाएँ पाने की लालसा के कारण पारिवारिक सहनशक्ति समाप्त होती जा रही है। और स्वार्थ बढ़ता जा रहा है। अब वह अपनी खुशियाँ परिवार या परिजनों में नहीं बल्कि अधिक सुख साधन जुटाकर अपनी खुशियाँ ढूँढ़ता है।

9. कुछ समय पहले की बात है। देश की सीमा के किनारे बसे एक गाँव पर कुछ आतंकवादियों ने कब्जा कर लिया और वहाँ लूटपाट मचा दी। सैनिकों को सूचना मिली तो वह तुरंत ही उनसे निपटने के लिए चल पड़े। बरसात का मौसम था, घनघोर वर्षा हो रही थी। इसके कारण छोटे-छोटे ताल-तलैया भी खूब विशालकाय नज़र आ रहे थे। छोटी-सी नदी भी उफान मारती हुई बह रही थी। जिसके कारण नदी पर बने पुल टूट गए थे। सैनिकों को वह नदी पार करनी थी, मगर पार कैसे करते? सैनिकों ने कई प्रकार की युक्तियाँ लगाई किंतु वह पार पाने में असमर्थ रहे। सैनिकों ने देखा कि पास में एक झोपड़ी है उससे सहायता माँगी जाए, सैनिक उस झोपड़ी में गए। उस झोपड़ी में एक महिला रहती थी। उस महिला के पास अन्य कोई साधन या घर नहीं था। सैनिकों ने जब सारी बातें बताई कि आतंकवादी गाँव पर कब्जा कर चुके हैं और हमें फौरन वहाँ पहुँचना है। इसके लिए यह नदी पार करने के लिए कुछ लकड़ियों की हमें आवश्यकता होगी, जिससे हम नदी को पार कर पाएँगे। महिला ने पहले कुछ सोचा फिर कहा कि अपनी झोपड़ी मैं दोबारा बना लूँगी। आपको जितनी भी लकड़ी मेरी झोपड़ी से चाहिए निकाल लीजिए। महिला की इस भक्ति से सैनिक गद्‌गद हो गए और यथाशीघ्र ही नदी पर एक पुल का निर्माण किया गया। जिससे सभी सैनिक नदी के पार उतर गए। महिला की इस देशभक्ति की सराहना जितनी की जाए उतनी ही कम है। सैनिक जल्दी ही उस गाँव में पहुँच गए, जहाँ आतंकवादियों ने कब्जा किया हुआ था। सैनिकों ने काफ़ी मशक्कत के बाद कुछ आतंकवादियों को मार गिराया और कुछ को गिरफ़्तार कर लिया। परिणामस्वरूप देश में आने वाले एक बड़े संकट को उन्होंने बहादुरी से टाल दिया और दुश्मनों को सबक सिखाया।

10. हमें यह मानकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए कि इस धरती पर हमारे माता-पिता ही साक्षात ईश्वर रूपी अंश हैं। माता-पिता की सेवा करना ईश्वर की आराधना का दूसरा नाम है। आज माता-पिता को गंगाजल नहीं, केवल नल के जल की जरूरत है। यदि हम समय पर उनकी प्यास बुझा सकें तो इसी धरती पर स्वर्ग है। यह विचार शहर के मंदिर में आयोजित श्रीमद्‌भागवत कथा के दौरान पंडित संजय वत्स जी महाराज ने व्यक्त किए। उन्होंने प्रवचन के दौरान कहा कि एक संत ने पवित्र गंगाजल भगवान शिव पर चढ़ाने की बजाय गरमी से तड़पते एक बैल को पिला दिया था। जिससे भगवान ने उन्हें दर्शन देकर उनका उद्‌धार किया।

उन्होंने कहा कि हमें भगवान से संसाररूपी धन नहीं बल्कि माता-पिता के दीर्घायु होने का आशिर्वाद माँगना चाहिए और माँगना चाहिए कि हे प्रभु, मेरा चित्त निरंतर आपके चरण कमलों में लगा रहे। मैं आपको कभी भूलूं नहीं। श्रीकृष्ण की लीलाएँ अनंत हैं, उनकी महिमा अपार है। उन्होंने कहा कि इस कथा का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि जीव और परमात्मा के बीच अज्ञान व वासना का पर्दा है। वासना का विनाश होने पर ही कृष्ण मिलन संभव है। हृदय में ज्ञान का दीपक जलाने वाले गुरुदेव साक्षात भगवान ही हैं। और हमारे माता-पिता से बढ़कर और कोई दूसरा सद्गुरु नहीं है। उन्होंने आगे बताया– इस संसार में कई लोक हैं। भूलोक के चारों ओर अनेक द्वीप व समुद्र हैं। इन सभी में लाखों जीव निवास करते हैं। इन जीवों को भगवान से ही गति मिल रही है। जीव चाहे कितना भी बड़ा हो या फिर छोटा हो, जब तक उसमें प्राण हैं तभी तक वह जिंदा रह सकता है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–1

खंड 'क' : (अपठित गद्यांश)

1. (क) iii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iii

अथवा

(क) iii	(ख) i	(ग) iv	(घ) iii	(ङ) ii
2. (क)	(ख)	(ग)	(घ)	(ङ)

अथवा

(क) iv	(ख) ii	(ग) iii	(घ) iv	(ङ) iv

खंड 'ख' : (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (क) ii	(ख) iv	(ग) i	(घ) iii	(ङ) iii
4. (क) i	(ख) ii	(ग) i	(घ) ii	(ङ) iii
5. (क) ii	(ख) iv	(ग) iii	(घ) iii	(ङ) ii
6. (क) iv	(ख) ii	(ग) iii	(घ) ii	

खंड 'घ' : (लेखन)

13. छात्र स्वयं करें।

14. छात्र स्वयं करें।

15. छात्र स्वयं करें।

16. छात्र स्वयं करें।

17. छात्र स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र-2

खंड 'क' : (अपठित गद्यांश)

1. (क) ii	(ख) iii	(ग) i	(घ) iv	(ङ) i

अथवा

(क) ii	(ख) iv	(ग) iv	(घ) i	(ङ) ii
2. (क) i	(ख) iv	(ग) i	(घ) iv	(ङ) iii

अथवा

(क) iv	(ख) ii	(ग) ii	(घ) ii	(ङ) i

खंड 'ख' : (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (क) i	(ख) i	(ग) i	(घ) i	(ङ) iv
4. (क) ii	(ख) i	(ग) i	(घ) ii	(ङ) i
5. (क) iv	(ख) iii	(ग) i	(घ) iii	(ङ) i
6. (क) ii	(ख) iv	(ग) i	(घ) iv	

खंड 'घ' : (लेखन)

13. छात्र स्वयं करें।

14. छात्र स्वयं करें।

15. छात्र स्वयं करें।

16. छात्र स्वयं करें।

17. छात्र स्वयं करें।

2. अलंकार

1. (क) यमक अलंकार, अनुप्रास अलंकार
   (ख) उपमा अलंकार
   (ग) रूपक अलंकार, पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
   (घ) रूपक अलंकार
   (ङ) उपमा अलंकार, अनुप्रास अलंकार
   (च) उपमा अलंकार
   (छ) अनुप्रास अलंकार
   (ज) रूपक अलंकार
   (झ) रूपक अलंकार, अनुप्रास अलंकार
   (ञ) अनुप्रास अलंकार
   (ट) रूपक अलंकार
   (ठ) अनुप्रास अलंकार
   (ड) यमन अलंकार
   (ढ) उपमा अलंकार
   (ण) श्लेष अलंकार, अनुप्रास अलंकार
2. (क) रूपक अलंकार
   (ख) रूपक अलंकार
   (ग) अनुप्रास अलंकार
   (घ) अनुप्रास अलंकार
   (ङ) उत्प्रेक्षा अलंकार
   (च) उपमा अलंकार
   (छ) अनुप्रास अलंकार, रूपक अलंकार
   (ज) उपमा अलंकार
   (झ) अनुप्रास अलंकार
   (ञ) अनुप्रास अलंकार
   (ट) पुनरुक्तिप्रकाश एवं अनुप्रास अलंकार
   (ठ) उपमा अलंकार
   (ड) अनुप्रास अलंकार
   (ढ) रूपक अलंकार, अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

(ण) रूपक अलंकार

(त) रूपक अलंकार, अनुप्रास अलंकार

(थ) रूपक अलंकार, अनुप्रास अलंकार

(द) अनुप्रास अलंकार

(ध) (i) उपमा अलंकार (ii) अनुप्रास अलंकार

(न) अनुप्रास अलंकार, उत्प्रेक्षा अलंकार

(प) उत्प्रेक्षा अलंकार

(फ) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ब) यमक अलंकार

(भ) अनुप्रास अलंकार

(म) अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश एवं उपमा अलंकार

3. (क) हैं किनारे कई पत्थर पी रहे चुपचाप पानी।

(ख) मुदित महीपति मंदिर आए।

(ग) उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।
विहँसे संत सरोज सब, हरषे लोचन भृंग।।

(घ) रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।।

(ङ) पीपर पात सरिस मन डोला।

(च) देखन नगर भूप सुत आए। समाचार पुरवासिन्ह पाए।
धाय काम-धाम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।

(छ) पानी परात को हाथ छुयो नहिं,
नैनन के जल से पग धोए।

(ज) तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती हैं।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) iv (ख) i (ग) ii (घ) i (ङ) ii

(च) i (छ) i (ज) i